R.N.I.Regd.No.:RAJHIN/2005/16223
Postal Regd.No.:JAIPURCITY/107/2022-24

कृषि, सहकारिता, पशुपालन व ग्रामीण विकास का अग्रणी साप्ताहिक समाचार पत्र

हलधर टाइम्स

रक्षाबंधन पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ

IF UNDELIVERED PLEASE RETURN TO
हलधर टाइम्स
सी-17, पुरोहित जी का बास, सरकारी मिडिल स्कूल के पास, 22 गोदाम, जयपुर-302006

प्रत्येक सोमवार को प्रकाशित

मूल्य : ₹ 5/- पृष्ठ : 8

जयपुर | वर्ष-19, अंक-39 | 19 अगस्त - 25 अगस्त, 2024

www.haldhartimes.in

(वार्षिक मूल्य : ₹250/-)

हलचल

आरपीएसी ने जारी किया शुद्धि पत्र

जयपुर। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा सहायक सांख्यिकी अधिकारी (कृषि विभाग) भर्ती-2024 के लिए वर्गवार वर्गीकरण के संबंध में शुद्धि पत्र जारी किया है। इनका अवलोकन अभ्यर्थी आयोग की वेबसाइट पर कर सकते है। आयोग सचिव ने बताया कि कृषि विभाग में सहायक सांख्यिकी अधिकारी के 10 पदों पर भर्ती हेतु विज्ञापन संख्या 11/2023-24 दिनांक 12 जनवरी 2024 को जारी किया गया था। विभाग द्वारा इन पदों की संख्या में वृद्धि किए जाने के फलस्वरूप कुल पदों की संख्या 14 हो गई है। इसके संशोधित वर्गवार वर्गीकरण के संबंध में शुद्धि पत्र संख्या 07/2024-25 जारी किया गया है।

30 सितम्बर तक करें आवेदन

बारां। उप निदेशक धनराज मीणा ने बताया कि आत्मा योजना के अन्तर्गत कैफेटेरिया गतिविधि बी-7 के तहत विभिन्न गतिविधियो में पंचायत समिति और जिला स्तर पर प्रत्येक गतिविधिवार 5-5 कृषकों का चयन करते हुए राशि रू. क्रमशः 10000 रुपये और 25000 रुपये पुरस्कार दिए जाएंगे। इच्छुक नवाचारी कृषक अपना आवेदन कृषि विभाग के कार्यालय संयुक्त निदेशक, आत्मा कार्यालय, सहायक निदेशक, सहायक कृषि अधिकारी, कृषि पर्यवेक्षक, उद्यान विभाग, पशुपालन विभाग अथवा कृषि विज्ञान केन्द्र अंता में निर्धारित प्रारूप में 30 सितम्बर तक कर सकते है।

खुदरा ऊर्वरक प्रशिक्षण 28 से

बाड़मेर। कृषि विज्ञान केंद्र दांता के वरिष्ठ वैज्ञानिकडॉ. विनय कुमार ने कहा कि केवीके में 15 दिवसीय खुदरा ऊर्वरक प्रशिक्षण 28 अगस्त से आयोजित होगा। प्रशिक्षण समन्वयक हंसराज सैन ने बताया कि प्रशिक्षण में 32 व्याख्यान और 12 प्रेक्टिकल करवाए जाएंगे। 10वीं कक्षा इच्छुक आधर कार्ड, फोटो के साथ कार्यलय दिवस में आकर अपना पंजीयन करवा सकते है।

देसी का नया बैच जल्द ही

चुरू। सहायक निदेशक कृषि (वि.) कुलदीप शर्मा ने बताया कि कृषि विस्तार कार्यक्रमों से किसानों को लाभांवित करने के लिए जल्द ही 48 सप्ताह के प्रशिक्षण का नवीन बैच शीघ्र ही प्रारम्भ किया जाएगा। प्रशिक्षण के लिए 10वीं पास कोई भी आवेदक 20000 रुपए शुल्क के साथ आवेदन कर सकता है। पूर्व में कृषि आदान लाईसेंस होने पर शुल्क 10000 रुपए होगा।

पाठक बने पत्रकार

हलधर टाइम्स के पाठक खेती / पशुपालन से जुड़ी समस्या, फोटो, जानकारी व्हाट्सएप के इन नम्बरों पर भेजें।

9828165521
7976452840
www.haldhartimes.in

केन्द्रीय शुष्क बागवानी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने तैयार की तरबूज-खरबूज की नई किस्म

थार तृप्ति की महिमा अब एमपी से गोवा तक

पीयूष शर्मा

जयपुर। अब मध्यप्रदेश, गोवा और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में भी थार की महिमा का बखान होगा। जी हां, सच यही है। कुछ ऐसा ही करिश्मा कर दिखाया है इन राज्यों के किसानों के लिए बीकानेर स्थित केन्द्रीय शुष्क बागवानी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने। संस्थान के वैज्ञानिको ने विभिन्न शुष्क फलों से थार को रसीला करने के बाद वैज्ञानिको ने अब मरू देश की मोटी चीज यानी तरबूज को गोवा तक पहुंचा दिया है। जल्द ही थार की यह थाती इन तीन राज्यों के किसानों की समृद्धि बढ़ाने का काम करेगी। क्योंकि, उत्पादन के मामले में संस्थान द्वारा विकसित तरबूज और खरबूज की नवीन कि स्मों ने प्रचलित किस्मों को भी पीछे छोड़ दिया है। गौरतलब है कि संस्थान के वैज्ञानिकों ने तरबूज और खरबूज की नई किस्म तैयार की है। वैज्ञानिकों ने तरबूज किस्म को थार तृप्ति और खरबूज किस्म को थार महिमा नाम दिया है। कृषि वैज्ञानिको का कहना है कि तरबूज और खरबूज को मरू प्रदेश की फसल माना जाता है और प्रदेश में पैदा होने वाले तरबूज-खरबूज अपने रंग रूप और स्वाद के कारण देश के कई हिस्सों में पसंद किए जाते है। इस कारण यहां पैदा होने वाले तरबूज और खरबूज की खपत दूसरे राज्यों में भी कम नहीं है। इसी को ध्यान में रखते हुए इन नवीन किस्मों का विकास संस्थान के द्वारा किया गया है। गौरतलब है कि वर्तमान में तरबूज से भी ज्यादा खरबूज की फसल किसानो की आर्थिक समृद्धि बढ़ाने काम कर रही है। क्योंकि, इस फल का हर एक भाग उपयोगी है। किसानो की माने तो खरबूज की फसल से प्रति हैक्टयर खर्च निकालने के बाद दो से ढाई लाख रूपए की बचत मिल जाती है। तरबूज और खरबूज किस्मों के प्रजनक वैज्ञानिक डॉ. बीआर चौधरी ने बताया कि खरबूज किस्म की पहचान राजस्थान के लिए हुई है। जबकि, तरबूज किस्म की पहचान जोन-7 यानी मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गोवा सहित जोन के अन्तर्गत आने वाले राज्यों के लिए हुई है। उन्होने बताया कि इन किस्मों के विकास में 7-8 साल का समय लगा है। इन किस्मों के विभिन्न स्थानों पर परीक्षण हुए है। गौरतलब है कि संस्थान के प्रयासों से पश्चिमी राजस्थान के किसान बेर, लसोड़ा, सांगरी, बेलपत्र सहित दूसरी शुष्क-अर्द्धशुष्क फल-सब्जी फसलों का उत्पादन लेकर अपनी आमदनी बढ़ा रहे है।

अर्का मणिक को छोड़ा पीछे

उन्होने बताया कि संस्थान द्वारा विकसित तरबूज किस्म थार तृप्ति ने उत्पादन के मामले में चैक वैरायटी अर्का मणिक को पीछे छोड दिया है। चैक किस्म से इसका उत्पादन 25 फीसदी तक ज्यादा मिला है। गौरतलब है कि इस किस्म से प्रति हैक्टयर 450 क्विंटल तक उत्पादन मिलता है। इस किस्म का परीक्षण राहुरी, जबलपुर, लुधियाना, दिल्ली, राजस्थान, बंगलुरू सहित देश के दूसरे परीक्षण केन्द्रो पर हुआ है। उन्होंने बताया कि थार तृप्ति के फल में 12 प्रतिशत टीएसएस और एक फल का वजन ढ़ाई से तीन किलोग्राम होता है। इसका फल गोल, धारीदार और मोटे छिलके वाला होता है। इससे यह किस्म लंबी दूरी के परिवहन के लिए भी उपयुक्त है। इस किस्म की पहचान मध्यप्रदेश, गोवा, महाराष्ट्र सहित जोन-7 के लिए हुई है।

पीएम ने किया विमोचन

संस्थान के द्वारा विकसित तरबूज और खरबूज की यह किस्में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा विमोचित किस्मों में शामिल रही है। गौतरलब है कि पीएम मोदी ने आईसीएआर संस्थानों और राज्य कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उच्च उत्पादन क्षमता वाली 109 और 32 जलवायु अनुकूल किस्मों का राष्ट्र को समर्पित किया था।

12 प्रतिशत टीएसएस

बात करें खरबूजा किस्म थार महिमा की तो इसके एक फल का वजन 600-700 ग्राम होता है। वही इसका आकार गोल है। छिलका जालीदार और धारीदार है। नजर डाले मिठास पर तो इसमें 12 प्रतिशत टीएसएस होता है। जो मुहं में चीनी घोलने का काम करता है। डॉ. चौधरी ने बताया कि इस किस्म की बुवाई फरवरी में होती है। फसल की प्रथम तुड़ाई 70-80 दिन पर मिल जाती है। इस किस्म की पहचान राजस्थान के शुष्क-अर्द्धशुष्क क्षेत्रों के लिए हुई है। उन्होने बताया कि इसके गूदे का रंग नारंगी और प्रचलित किस्मों से मोटाई लिए हुए है। इस किस्म से प्रति हैक्टयर 200 क्विंटल तक औसत उत्पादन मिलता है। उन्होने बताया कि यह परीक्षण के दौरान इसका उत्पादन चैक किस्म पूसा मधुरस से 20 प्रतिशत ज्यादा मिला है।

ढ़ाई लाख तक मुनाफा

कृषि वैज्ञानिकों के मुताबिक खरबूजे की खेती तरबूज से ज्यादा फायदेमंद साबित होती है। क्योंकि, इसकी मांग बाजार में बनी रहती है। गौरतलब है कि इस साल तरबूज के थोक भाव 3-5 रूपए प्रति किलो बोले जा रहे है। जबकि, खरबूजा रिटेल में 30 रूपए प्रतिकिलो की दर से बिक्री हो रहा है। उन्होंने बताया कि दुर्गापुरा मधु किस्म 85-90 दिन में तुड़ाई अवस्था में आ जाती है। खरबूजे की खेती में किसान की प्रति हैक्टयर लागत दो लाख रूपए तक आती है। जबकि, मुनाफा ढ़ाई लाख रूपए तक मिल जाता है। गौरतलब है कि प्रदेश में तीन से चार हजार हैक्टयर क्षेत्र में खरबूजे की खेती होती है।

किसानों को तरबूज-खरबूज की नई किस्मों का बीज उपलब्ध कराने के लिए तैयारियां शुरू की गई है। संस्थान में अलग-अलग जननद्रव्यों का परीक्षण किया जा रहा है। साथ ही, नई किस्म विकास पर भी शोध कार्य चल रहा है। यह दोनों किस्में किसानों की आय बढाने में मददगार होगी।

डॉ. जगदीश राणे, निदेशक, सीआईएएच, बीकानेर

एयू जोधपुर का अभिनव प्रयासः कृषि विश्वविद्यालय स्तर पर राज्य का पहला किसान कॉल सेंटर शुरू

एक कॉल पर मिलेगा किसानों को समस्याओं से छुटकारा

जोधपुर। अब एक कॉल पर किसानों को खेती- बाड़ी से जुड़ी समस्याओं से छुटकारा मिल जायेगा। फसलों की उत्पादकता, उत्पादन और किसानो की आय बढ़ाने के दृष्टिकोण के साथ कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर ने एक अभिनव प्रयास करते हुए किसान कॉल सेंटर सेवा शुरू की है। इस कॉल सेंटर के जरिए किसान घर बैठे टोल फ्री नम्बर पर पश्चिमी राजस्थान में पैदा होने वाली खाद्यान्न, दलहनी-तिलहनी, फल-सब्जी में रोग-कीट प्रबंधन के साथ-साथ पशुधन से जुड़े सवालो का जवाब कृषि विशेषज्ञों से नि:शुल्क प्राप्त कर पायेंगे। किसानों के लिए विश्वविद्यालय की ओर से टोल फ्री नंबर 1800-180-3000 उपलब्ध करवाए गए है । जहां किसान बेहिचक अपनी समस्याओं का समाधान पा सकेगा।

प्रदेश के पहला कृषि विश्वविद्यालय

गौरतलब है कि राजस्थान में किसानों के लिए विश्वविद्यालय स्तर पर कॉल सेंटर सेवा शुरू करने वाला जोधपुर कृषि विश्वविद्यालय प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय बन गया है। जो घर बैठे किसानों की खेती बाड़ी से संबंधित विभिन्न समस्याओं का समाधान विशेषज्ञों के माध्यम से उपलब्ध करवाएगा। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार ने फीता काटकर विश्वविद्यालय परिसर में बने किसान कॉल सेंटर का उद्घाटन किया। उन्होंने कॉल सेंटर की कार्य प्रणाली का जायजा लेकर कृषि वैज्ञानिकों को किसानों की हरसंभव मदद के लिए प्रोत्साहित किया।

रात 10 बजे तक मिलेगी सेवा

विश्वविद्यालय के किसान कॉल सेंटर में किसानों की अपनी बोली में विशेषज्ञों द्वारा टेलीफोन पर जवाब दिया जाएगा। केसीसी पर सुबह 6 बजे से रात 10 बजे तक यह सुविधा उपलब्ध रहेगी। यहां किसान को कृषि संबद्ध (बागवानी, पशुपालन, मत्स्य पालन, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन, नर्सरी प्रबंधन, कृषि इंजीनियरिंग, कृषि विपणन, जैव प्रौद्योगिकी, पशु चिकित्सा और फसलों में विभिन्न रोग एवं रोकथाम संबंधित जानकारी उत्कृष्ट संचार कौशल युक्त विशेषज्ञों द्वारा उपलब्ध करवाई जाएगी।

किसानों की कृषि से जुड़ी विभिन्न समस्याओं का समाधान विश्वविद्यालय की ओर से स्थापित इस किसान कॉल सेंटर में किया जाएगा।

डॉ प्रदीप पगारिया, प्रभारी, किसान कौशल विकास केंद्र, जोधपुर

विश्वविद्यालय ने किसान कॉल सेंटर सेवा शुरू की है। दूरदराज के किसानों के लिए केसीसी सेवा बेहद लाभकारी साबित होगी। कॉल सेंटर की स्थापना करने वाला कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर राज्य में पहला संस्थान है।

डॉ अरुण कुमार, कुलपति, एयू, जोधपुर

अनुसंधान छोड़कर फोटो खीचेंगे कृषि वैज्ञानिक

कृषि विभाग का अजब-गजब फरमान

जयपुर। कृषि विभाग ने एआई चैट बॉट को धरातल देने के लिए एक अजब-गजब फरमान जारी किया है। जिसमें प्रदेश के पांचों कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को फसल के कीट-रोग से जुड़ी फोटो खींचने के लिए निर्देशित किया गया। अतिरक्त निदेशक कृषि (अनु.) के हस्ताक्षरयुक्त इस फरमान में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के साथ-साथ कृषि खंड़ बीकानेर, जोधपुर, कोटा, जयपुर और उदयपुर के अतिरिक्त निदेशक कृषि विस्तार को भी निर्देशित किया गया है कि वह एआई-एमएल फसल आधारित कीट-रोग, मौसम, खरतपवार, पोषक तत्व प्रबंधन की साप्ताहिक जानकारी एआई चैट बोट से संबंधित साप्ताहिक सूचना प्रेषित करें। गौरतलब है कि प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिक कृषि विभाग के दायरे से बाहर है। वैज्ञानिक शिक्षण, अनुसंधान और तकनीक प्रसार का कार्य करेंगे अथवा कृषि विभाग के लिए कैमरामैन की भूमिका अदा करेंगे।

यह है विभाग का तर्क

एआई चैट बॉट से जुड़े अधिकारियों ने बताया कि किसानों की समस्याओं का घर बैठे समाधान करने के लिए एआई चैट बॉट आधारित काम हाथ में लिया गया। ताकि, फसल के साथ-साथ किसानों का डेटा बेस तैयार हो सके। इस चैट बॉट में किसानों से मिलने वाली मोबाइल इमेज के आधार पर कीट-रोग की पहचान करके एआई चैट बॉट प्रबंधन के उपाए सुझायेगा।

प्रॉम का डिजटलाइजेशन क्यों नहीं

गौरतलब है कि कृषि विभाग ने एआई चैट बॉट का कार्य एक गैर सरकारी संस्था को सौंपा है। इससे आंशका है कि यह संस्था किसानों से ज्यादा अपने भले पर ध्यान देगी। दूसरी बात यह है कि कृषि वैज्ञानिकों और अधिकारियों को इसके लिए अलग से कोई प्रोत्साहन राशि भी देश नहीं होगी। गौरतलब है कि कीट-रोग की पहचान के लिए एक पायलट प्रोजेक्ट के तहत कृषि विभाग ने प्रॉम नामक पुस्तिका का प्रकाशन किया था। लेकिन, कीट-रोग की पहचान के लिए विभाग इस पुस्तिका का डिजीटलाइजेशन नहीं कर रहा है।

कृषि विश्वविद्यालय स्वतंत्र संस्था है। मोबाइल इमेज के लिए कोई प्रोत्साहन राशि देय नहीं होगी। एआई चेट बॉट के लिए यह दिशा-निर्देश जारी किए है। ताकि, किसानों को घर बैठे लाभान्वित किया जा सके।

- **एचएस मीना,** अति. निदेशक कृषि (अनुसंधान) जयपुर

एआई चैट बोट ओर गैर सरकारी संस्था की पूरी खबर विस्तार के साथ हलधर टाइम्स के अगले अंक में ....

केन्द्र सरकार का नया कार्यक्रमः कृषि वैज्ञानिक-कृषि अधिकारी करेंगे संवाद

सरकार से हर महीने होगी, किसानों की बात

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने किसानों के लाभ के लिए एक नई पहल की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि अब हर महीने एक दिन किसानों की बात कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा, जिसमें किसान सीधे वैज्ञानिकों और कृषि अधिकारियों से संवाद कर सकेंगे। इस कार्यक्रम के माध्यम से विज्ञान की नवीनतम तकनीकों और अनुसंधानों का लाभ किसानों तक तुरंत पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में चौहान ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक नए युग की शुरुआत हो रही है, जहां किसान देश की धड़कन और जनता की आवाज हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी की उस पहल की सराहना की, जिसमें स्वतंत्रता दिवस पर किसानों को आमंत्रित किया गया, और कहा कि पहले की सरकारों में किसानों को कभी इतनी प्राथमिकता नहीं दी गई थी।

रेडियो पर होगी प्रसारित

चौहान ने बताया कि किसानों की बात कार्यक्रम रेडियो पर प्रसारित होगा। जहां वे स्वयं, कृषि वैज्ञानिक और विभागीय अधिकारी किसानों से सीधा संवाद करेंगे। इस पहल का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसानों को समय पर सही जानकारी मिले और वह सही तरीकों से खेती कर सकें। उन्होंने किसानों को आश्वस्त किया कि सरकार उनके साथ है और उनकी समस्याओं के समाधान के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, फसल बीमा योजना, और खाद्य सब्सिडी जैसी योजनाओं का जि करते हुए उन्होंने कहा कि इन योजनाओं के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाने और उनके जीवन स्तर को सुधारने के निरंतर प्रयास जारी हैं।

जल्द ही प्राकृतिक खेती मिशन

उन्होंने कहा कि मृदा का स्वास्थ्य ठीक करने के लिए अपने खेत के कुछ हिस्से में प्राकृतिक खेती करें इसके लिए मिशन बहुत जल्दी आने वाला है, इसकी रूपरेखा बन गई है। इससे हम कई तरह के काम करके अपनी आय बढ़ा सकते हैं।

दलहन खरीद का वादा

केन्द्रीय कृषि मंत्री ने कहा कि किसान जितना भी तुअर, मसूर, उड़द उगाएंगे वो सब सरकार खरीदेगी। पहले के जमाने में तो खरीद ही नहीं होती थी। पुरानी सरकार में दाल की खरीदी केवल 6 लाख मीट्रिक टन की गई थी-मोदी सरकार ने 1.70 करोड़ मीट्रिक टन दाल खरीदी। उत्पादन की लागत घटाने के प्रयास भी जारी हैं। पीएम किसान सम्मान निधि के तहत अब तक 3.24 लाख करोड़ रुपये डाल दिए गए हैं किसानों के खातों में।पीएम फसल बीमा योजना आज दुनिया की सबसे बड़ी फसल बीमा योजना है।

रैंकिंग | **केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा जारी एनआईआरएफ रैंकिंग में हुआ खुलासा**

प्रदेश के कृषि विवि प्राईवेट से भी गये-बीते

जयपुर। यह बात सच साबित होती नजर आ रही है कि प्रदेश के राजकीय कृषि विश्वविद्यालयों और कृषि महाविद्यालयों में पप्पू पास हो रहे है। शिक्षा की गुणवत्ता के साथ-साथ सुविधाओं का स्तर साल दर साल गिर रहा है। इसके चलते विश्वविद्यालय और कॉलेज राष्ट्रीय रैंकिंग में अपनी जगह नहीं बना पा रहे है। इस बात का खुलासा हुआ है हाल ही में केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा जारी एनआईआरएफ रैंकिंग में। कृषि विश्वविद्यालयों और कृषि कॉलेजो की रैंकिग पर गौर करें तो यह प्राईवेट कृषि विश्वविद्यालयों और कॉलेजों से भी गये-बीते साबित हुए है। कृषि शिक्षाविदों का कहना है कि रैंकिंग में गिरावट का बड़ा कारण सरकार के द्वारा कृषि शिक्षा राजनीतिकरण है। सरकार मनमाने तरीके से कृषि महाविद्यालय खोल रही है। इससे कृषि शिक्षा का ढ़ांचा और शिक्षा की गुणवत्ता बिगड़ती जा रही है। विश्वविद्यालयों के साथ-साथ कृषि कॉलेजों में पद रिक्त पड़े हुए है। रिसर्च के बजट पर कैंची चल रही है। कृषि छात्र रिसर्च की आधारभूत सुविधाओं को तरस रहे है। ऐसे में सरकार को सोचने और चिंतन करने की जरूरत है।

टॉप 100 में भी नहीं

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा जारी टॉप चालीस कृषि संस्थानों में प्रदेश का एक भी कृषि संस्थान शामिल नहीं है। नजर डाले टॉप 100 पर तो इसमें भी प्रदेश का आंकड़ा शून्य है। स्टेटवार कृषि विश्वविद्यालयों पर नजर डाले तो कोटा कृषि विश्वविद्यालय टॉप पर है। इसके बाद जोधपुर दूसरे स्थान पर है। बात करें श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर की तो इसके हालात प्रदेश के प्राईवेट कृषि विश्वविद्यालयों से भी गये-बीते सामने आए है। जारी रैंकिंग सूची में इस विश्वविद्यालय की रैंकिंग काफी पायदान नीचे है।

बाहरी कुलपति भी एक बड़ा कारण

कृषि शिक्षाविदों का कहना है कि शैक्षणिक गुणवत्ता में गिरावट का एक बड़ा कारण कृषि विश्वविद्यालयों में नियुक्त होने वाले कुलपति भी है। पिछले सालों में कृषि विश्वविद्यालयों में नियुक्त कुलपतियों की सूची को उठाकर देखे तो इक्का-दुक्का कुलपति ही प्रदेश से ताल्लुक रखता है। अन्यथा सभी, दूसरे राज्यों के है। जो सरकार की सुविधाओं को भोग कर अपने-अपने संस्थानों में वापिस लौट जाते है। उन्होने बताया कि दूसरे राज्यों से आने वाले कुलपति प्रदेश के कृषि परिदृश्य में बदलाव तो दूर अपने विश्वविद्यालय के विकास का रौड़मैप ही तैयार में भी नाकाम साबित होते है। शायद, यही कारण है कि प्रदेश का किसान अब भी पुरान ढर्रे से खेती कर रहा है। ऐसे में सरकार को कुलपति की योग्यता रखने वाले स्थानीय कृषि शिक्षाविदो को मौका देने के बारे में सोचना चाहिए।

CMYK

शहरों के हाल बेहाल

अपनी बात

हर साल मानसून के दौरान हमारे शहरी ढांचे के हाल बेहाल दिखने लगते हैं। छोटे शहरों की बात छोड़िए, थोड़ी देर की बारिश में ही जयपुर, मुंबई, चेन्नई, दिल्ली और बेंगलुरु जैसे शहरों में हाहाकार जैसी स्थिति हो जाती है। सड़कों पर पानी का सैलाब आ जाता है। खुले नालों और मेनहोल में डूबने से लेकर करंट लगने से लोगों की जान चली जाती है। बस्तियां पानी में डूब जाती हैं। परिवहन व्यवस्था अवरुद्ध हो जाती है। कुल मिलाकर, जान-माल की भारी क्षति के साथ ही लोगों को भारी असुविधा की स्थिति से दो-चार होना पड़ता है। इसके पीछे के कारणों की पड़ताल करें तो अपर्याप्त ड्रेनेज यानी नाकाफी निकासी तंत्र, अनियोजित शहरीकरण और जलवायु परिवर्तन के चलते वर्षा के प्रारूप में परिवर्तन जैसे पहलू सामने आते हैं। जहां देश के अधिकांश हिस्सों में ड्रेनेज व्यवस्था इतनी लुंजपुंज है कि वह पानी की समुचित निकासी नहीं कर पाती, वहीं जल राशियों पर अतिक्रमण ने स्थितियों को और खराब कर दिया है। यह किसी से छिपा नहीं है कि हमारे शहरों का ड्रेनेज सिस्टम कालबाह्य हो चुका है और वह भारी बारिश की स्थिति से निपटने में सक्षम नहीं। ऊपर से शहरों में बढ़ता कचरा, निर्माण के बाद बचा हुआ मलबा, नालों में जमा गाद बारिश में स्थितियों को और बिगाड़ देती है। सेंट्रल पब्लिक हेल्थ एंड एनवायरमेंटल इंजीनियरिंग आर्गेनाइजेशन (सीपीएचईईओ) का मानक ढांचा भी बाढ़ नियंत्रण के पुराने मापदंडों पर आधारित है। इससे समस्या और विकराल हो जा रही है। अनियोजित शहरीकरण के चलते ड्रेनेज चैनलों और प्राकृतिक जल राशियों पर अतिक्रमण बढ़ा है। इससे अतिरेक पानी की निकासी के मोर्चे पर शहर असहाय होते जा रहे हैं। डूब क्षेत्र में निर्माण जारी हैं। मिसाल के तौर पर जयपुर अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट जो इन दिनों बरसाती पानी से लबालब नजर आ रहा है। रालधानी में ऐसे निर्माण के बहुतेरे उदाहरण मिल जाएंगे जिन्हें जल राशियों को पाटकर बनाया गया। सिकुड़ता हरित आवरण भी पानी को सोखने की क्षमता घटा रहा है। मौसम के बदले मिजाज ने वर्षा के तेवर भी बदल दिए हैं। ऐसे में इन स्थितियों पर नियंत्रण के प्रभावी उपाय तलाशना आवश्यक ही नहीं, अपितु अनिवार्य हो गया है। इस दिशा में सबसे पहला उपाय तो ड्रेनेज सिस्टम को उन्नत बनाने के रूप में करना होगा। इसके लिए आधुनिक हाइड्रोलाजिकल डाटा के आधार पर मौसम के पैटर्न और वर्षा के हालिया रुझान का आकलन करते हुए ड्रेनेज सिस्टम को नए सिरे से तैयार करना चाहिए। नियमित तौर पर उनका बेहतर रखरखाव सुनिश्चित करना चाहिए। समय-समय पर उसकी साफ-सफाई की जाए। इन गतिविधियों के लिए विशेष वित्तीय कोष की व्यवस्था की जाए। ड्रेनेज सिस्टम को सुचारु ढंग से चलाए रखने के लिए जीआइएस मैपिंग और रिमोट सेंसिंग जैसी तकनीक का इस्तेमाल किया जाए ताकि कहीं भी उसके अवरुद्ध होने पर तुरंत कार्रवाई की जा सके। इसके साथ ही ड्रेनेज सिस्टम को नई परिस्थितियों के अनुरूप समय-समय पर उन्नत बनाते रहना चाहिए। अभी सीपीएचईईओ के जो मानक हैं वह बाढ़ नियंत्रण के दशकों पुराने और अप्रासंगिक प्रारूप पर आधारित हैं, जो जलवायु परिवर्तन के चलते मौसमी परिदृश्य पर आ रहे परिवर्तनों के अनुकूल नहीं हैं। यही कारण है कि एकाएक हुई तेज वर्षा के समय हमारा समूचा तंत्र चरमरा जाता है।

इस समस्या के समाधान में उस स्पांज सिटी संकल्पना को अपनाना भी उपयोगी साबित हो सकता है, जो शहरों को वर्षा के पानी को संभालने, स्टोर करने और उसके शोधन में सक्षम बनाता है। इस दिशा में पानी के प्रवाह को नियंत्रित करने के लिए फुटपाथ के नीचे जल संरक्षण, ग्रीन रूफ, रेन गार्डन और शहरी आर्द्रभूमियों पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है। इससे भूजल रीचार्ज की मुहिम को भी मजबूती मिलेगी। नई शहरी परियोजनाओं में ग्रीन इन्फ्रास्ट्रक्चर के समावेश को अनिवार्य किया जाए और पुराने ढांचे को नई तकनीक से उन्नत करने पर प्रोत्साहन की व्यवस्था भी की जाए। ऐसे ग्रीन इन्फ्रास्ट्रक्चर का दीर्घकालिक लाभ सुनिश्चित करने के लिए उसके प्रभावी रखरखाव की दिशा में स्पष्ट नियमावली तैयार की जाए। प्राकृतिक जल राशियों और ड्रेनेज चैनलों का प्रभावी प्रबंधन भी शहरी बाढ़ के जोखिमों को कम करने में सहायक होगा। इन पर अतिक्रमण की स्थिति में शासन-प्रशासन को शिकंजा कसना होगा और डूब क्षेत्र में निर्माण को लेकर समग्र प्रभावों का संज्ञान लेने वाली किसी व्यापक योजना पर काम करना होगा। इसमें अवैध ढांचों से मुक्ति का भी कोई मार्ग निकालना होगा। हमें एक ऐसा तंत्र बनाना होगा जो एकाएक तेज बारिश से होने वाले जलभराव से राहत दिला पाए। इन नीतियों में अपेक्षाकृत ऊंची इमारतों से लेकर सक्षम ड्रेनेज प्रणाली जैसे पहलू निश्चित रूप से शामिल होने चाहिए। इसके साथ ही मौजूदा ढांचे को भी नए समय की चुनौतियों के अनुरूप प्रभावी बनाना भी उतना ही आवश्यक है।

पौष्टिक आहार से मिटेगा कुपोषण

सप्ताह का साक्षात्कार

प्रदेश में चारागाह अतिक्रमण की भेंट चढ़ते जा रहे है। इसके चलते किसान और पशुपालक के सामने चारे की समस्या साल दर साल गहराती जा रही है। एक दुधारू पशु को प्रतिदिन 5 किलोग्राम हरे चारे और 15 किलोग्राम भूसे अथवा सूखे चारे की आवश्यकता होती है जिसका बाजार मूल्य 75 से 90 रूपए बैठता है। किसान भूसा तैयार करता है तो उसे बायलर और भट्टों में जलाने के लिए ऊचें दाम पर उद्योगपति खरीद लेते हैं। इस तरह भूसे का अकाल बढ़ रहा हैं। साथ ही, पशु कुपोषण की समस्या से साधारण पशुपालक के लिए पशुपालन बूते से बाहर हो रहा है। भूखा और कुपोषित जानवर कब तक और कितना दूध देगा? यह सोचनीय और चिन्तनीय हैं। पशु आहार की बढ़ती समस्या को लेकर हलधर टाइम्स की डॉ. महेन्द्र सिंह मील से हुई वार्ता के मुख्यांश...

जीवन परिचय

रींगस (सीकर) से ताल्लुक रखने वाले डॉ. महेन्द्र सिंह मील वर्तमान में पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां-उदयपुर में सहायक आचार्य के पद पर कार्यरत है। डॉ. मील ने अपने कॅरियर की शुरूआत बीकानेर महाविद्यालय में टीचिंग एसोसिएट के पद से की। इसके बाद पशुपालन विभाग में पशु चिकित्सा अधिकारी भी रहे। साथ ही, तीन वर्ष चांधन-जैसलमेर के पशुधन अनुसंधान केन्द्र पर अपनी सेवाएं भी इन्होंने दी। इन्होंने राजुवास से स्नोतकोत्तर की उपाधि ली है। वर्तमान में पीएचड़ी कर रहें है। दो बार राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके है। इनके 13 शोध पत्र राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित हो चुके है।

असंतुलित आहार किन समस्याओं को जन्म देता है?

असंतुलित आहार के कारण पशु में आनुवंशिक क्षमता से कम दुग्ध उत्पादन, छोटा दुग्ध-काल और दो ब्यांत के बीच अधिक अंतराल, प्रजनन क्षमता में कमी, पशु में उपापचयी समस्या जैसे कि मिल्क-फीवर, कीटोसिस की सम्भावना और धीमा शारीरिक विकास जैसी हानि उठानी पड़ती हैं।

पशुपालक चारे की पौष्टिकता को कैसे बढ़ा सकता है ?

हरे चारे की कमी के कारण पशु की निर्भरता रेशेदार सूखे चारे पर अत्यधिक बढ़ जाती है। अत: सूखे चारे की पौष्टिकता बढ़ाने में यूरिया घोल, यूरिया-शीरा, खनिज तरल मिश्रण और यूरिया शीरा खनिज ब्लॉक सहायक होते हैं। स्थानीय उपलब्धता के अनुसार अरडू, खेजड़ी, बबूल, पीपल, नीम, गूलर, बरगद, शहतूत आदि की पत्ती पशु को खिलानी चाहिए। सरसों की पत्ती और दूसरे हरे चारे को, सूखी घास और कडबी के साथ कुट्टी बनाकर खिलाने से चारा व्यर्थ नहीं जायेगा। आहार में खनिज लवण की कमी को दूर करने के लिए पशु को प्रतिदिन 50 ग्राम मिनरल मिक्सचर पाउडर खिलाना जरूरी रहता हैं।

चारे की समस्या से कैसे निजात पाई जा सकती हैं ?

किसान/ पशुपालक को सरकार चारा मिनीकिट बांट रही हैं। लेकिन, मिनीकिट का किसान क्या उपयोग कर रहा है। इसकी कोई मॉनिटरिंग नहीं कर रहा हैं। किसान समूह बनाकर चारा उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। चारे के बढ़ते दाम पर लगाम लगाने के लिए ग्राम स्तर पर चारा ड़िपो ग्राम सेवा सहकारी समिति के माध्यम से संचालित हो सकते है। गौशालाओं को जमीन और आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाकर चारा उत्पादन बढ़ाया जा सकता हैं। चारा उत्पादन को मनरेगा में शामिल किया जा सकता हैं।

गाय- भैंस में दुग्ध उत्पादन कैसे बढ़ाया जा सकता हैं ?

गाय-भैंस में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए सूखे और हरे चारे के साथ आवश्यकतानुसार बांटा खिलावे। साथ ही, खनिज लवण और साधारण नमक नियमित रूप से पशु को दे। वर्ष में दो बार कृमिनाशक दवा पशु को दे। अधिक दुग्ध उत्पादन और उन्नत संतति के लिए उच्च गुणवत्ता वाले नर सांड से प्राकृतिक परिसेवा अथवा कृत्रिम गर्भाधान द्वारा गर्भित करवाना चाहिए। कम उत्पादक नर पशु को बधिया करवाया जाना चाहिए। मादा पशु के ताव में नहीं आने अथवा गर्भ नहीं ठहरने की स्थिति में तुरन्त पशु चिकित्सक से सम्पर्क करके उपचार कराना चाहिए। ताकि, पशु का शुष्क समय न्यूनतम रखा जा सके। इसके अलावा पशु आवास प्रबंधन अन्त: और बाह्य परजीवी से मुक्त होना चाहिए।

अध्यात्म

राह सही दिखाते हैं सही फैसले

एक के बाद एक आने वाली स्थितियां और उलझे हुए हालात का मतलब यह है कि आप किसी एक अकेले फॉर्मूले पर निर्भर नहीं रह सकते। जिस किसी ने भी महान योद्धाओं या नायकों की जीवनी पढ़ी है, उन्हें तुरंत पता चल जाता है कि 'युद्ध का कोहरा', 'नेतृत्व का कोहरा' भी हो सकता है। यानी उलझी हुई परिस्थितियों में अंतरात्मा से बातचीत करने से ही सही राह पाई जा सकती है। खास महत्व वाले ज्यादातर हालात में यह स्थिति समूह के जागरूक फैसले में बदल जाती है, जहां फैसला लेने वाले के पीछे एक बेहतर टीम का होना, सही समय पर प्रभावी कदम उठाने के रूप में सामने आता है।

हम हर दिन फैसले लेते हैं। तो, हमें यह पता भी होना चाहिए कि सही फैसला कैसे लिया जाता है। अगर इसका ज्ञान हमें हो जाए तो जीवन के हर क्षेत्र में सफलता की राह आसान हो सकती है। जब फैसला लेने की घड़ी आती है तो सही फैसला लेना एक चुनौती होता है। फिर भी ज्यादातर लोग अपने फैसले अपनी पुरानी प्रतिक्रियाओं के आधार पर लेते हैं कि तब ऐसा होने पर उन्होंने क्या कदम उठाया था। उनका दिमाग एक ही तरीके से काम करने या प्रतिक्रिया देने का आदी हो जाता है यानी उनका दिमाग नई और अचानक आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं होता। फैसला हमारे कार्यों को स्वरूप देता है, इसीलिए कुछ न कुछ चुनाव हमें करने ही पड़ते हैं। जैसा कि कहा गया है शुरुआत महत्वपूर्ण होती है, उसके बाद उठाए जाने वाले कदम भी उतना ही महत्व रखते हैं। उसके बाद उठाए जाने वाले कदमों पर पकड़ होना काफी जरूरी है, वरना आगे उठाए जाने वाले कदम डगमगा सकते हैं और भरोसेमंद भी नहीं होते। महत्वपूर्ण कार्यों को करने की एक प्रक्रिया होती है। भारतीय मूल के प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक और आधुनिक मोटिवेशनल गुरु ने 7 कदम बताए हैं जो नए काम करने की प्रक्रिया को आसान बना देते हैं। यह हैं:

नए काम को शुरू करने की प्रक्रिया

1. खुद के सामने चुनौती रखना
2. स्थिति का आकलन करना
3. परामर्श लेना
4. फैसला करना
5. काम शुरू करना-इस दिशा में कदम उठाना
6. परिणाम हासिल करना
7. परिणाम के लिए जवाबदेही स्वीकार करना

इन सात कदमों को आपके सामने रखते हुए मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि इस तरह के कार्य के मॉडल की अपेक्षा वास्तविक दुनिया में काम ज्यादा कठिन होते हैं। वास्तविक दुनिया में चुनौतियां एक सीधी लकीर में माल गाड़ी के डिब्बों की तरह एक-एक करके सामने नहीं आतीं। हर दिन में कई चीजों का आंकलन करना पड़ता है, लोगों से सलाह लेनी पड़ती है और यह सिलसिला निरंतर चलता रहता है।

प्रदेश में किसान कानून

राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955

किसानों के लिए प्रदेश में पालित काश्तकारी नियम, अधिनियम, धारा, उपधारा, विच्छेद, शब्दावली परिभाषा, न्यायिक अपीलीय अधिकार से जुड़ी जानकारी दी जा रही है। कॉलम में राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा-उपधारा से जुड़ी जानकारी इस प्रकार है।

(1क) उप-धारा (1) के उपबंध, राजस्व विधियां प्रसार (संशोधन) अध्यादेश, 1975 (1975 का अध्यादेश सं.13) के प्रारम्भ की तारीख पर लम्बित समस्त वादों, आवेदनों या कार्यवाहियों पर लागू होंगे।

(1ख) उन आदेशों, जिनकी उप-धारा (1) के अधीन अपील होती है, से भिन्न आदेशों की समस्त अपीलें जो लम्बित हो, राजस्थान राजस्व विधियां प्रसार (संशोधन) अध्यादेश, 1975 (1975 का अध्यादेश सं.13) के प्रारम्भ होने की तारीख को उपशमित हो जायेगी।

(2) इस धारा के अधीन अपील में पारित किसी भी आदेश की कोई अपील नहीं होगी।

1. विभाजन-सहकाश्तकार-राजीनामा-विधिमान्य-द्वितीय अपील. अपीलान्ट/वादी ने विचारण न्यायालय में प्रतिवादी जो सहकाश्तकार था, के विरुद्ध विभाजन का वाद प्रस्तुत किया। विचारण न्यायालय ने पक्षकारान् के मध्य राजीनामे को अवैध मानते हुए विचारण न्यायालय के आदेश और प्राथमिक डिक्री को अपास्त कर दिया तथा वाद गुणागुण के आधार पर निर्णय करने हेतु विचारण न्यायालय का प्रतिप्रेषित किया। उक्त निर्णय के विरुद्ध मण्डल में द्वितीय अपील पक्षकारों की सहमति से प्रस्तुत राजीनामा के आधार पर पारित प्राथमिक डिक्री विधिमान्य है। यदि कोई पक्षकार राजीनामा पर प्रश्नचिह्न लगाता है तो उसे यह साबित करना होगा कि तथा विचारण न्यायालय के निर्णय और प्राथमिक डिक्री की पुष्टि की गई।

2. यदि अपीली.- प्रतिप्रेषण के आदेश के विरुद्ध द्वितीय अपील पेश की गई। राजस्व मण्डल ने अपील स्वीकार की। रिट की अधिकारिता के अन्तर्गत, उच्च न्यायालय द्वारा अभिनिर्धारित किया गया कि मण्डल द्वारा धारा 225 के आदेशात्मक प्रावधानों की अनदेखी की गई है। अत: द्वितीय अपीलीय प्राधिकारी के आदेश की पुष्टि की गई।

धारा 226. अपील सरसरीतौर पर नामंजूर करने की शक्ति.- बोर्ड अथवा तो अपील मंजूर कर सकेगा अथवा उसे सरसरी तौर पर नामंजूर कर सकेगा।

धारा 227. गलती अथवा अनियमित के कारण किसी डिक्री अथवा आदेश को उलटा नहीं जाना अथवा उपान्तरित नहीं किया जाना.-पक्षकारों अथवा वाद हेतुकों के कुसंयोजन के कारण अथवा

कार्यवाहियों में किन्हीं गलतियों अथवा अनियमितताओं के, जो मामले के गुणागुण पर प्रभाव नहीं डालती हो, कारण किसी डिक्री अथवा आदेश को उलटा नहीं जायेगा, न उसमें सारभूत रूप से कोई फेरफार किया जायेगा, न अपील में किसी मामले को प्रतिप्रेषित किया जायेगा।

धारा 228. अपीलों के लिए परिसीमा.-(1) जिस डिक्री अथवा आदेश का परिवाद किया जाना है, उसकी तारीख से 30 दिन की समाप्ति के पश्चात कलक्टर को कोई अपील नहीं की जायेगी।

क्रमशः

अन्नदाता की सुख-समृद्धि के लिए छह सूत्रीय रणनीति

नजरिया

कृषि विकास और किसान कल्याण हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। अन्न के माध्यम से हमारे जीवन संचालन के सूत्रधार अन्नदाता के जीवन में सुख-समृद्धि लाना हमारा संकल्प है। इस संकल्प की पूर्ति के लिए हम हरसंभव प्रयास करेंगे। किसान की आय बढ़ाने के लिए हमने छह सूत्रीय रणनीति बनाई है। उत्पादन बढाना, खेती की लागत घटाना, उत्पादन के ठीक दाम दिलाना, प्राकृतिक आपदा में राहत की उचित राशि दिलाना, कृषि का विविधीकरण और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना, इसके अहम पहलू हैं। उत्पादन बढ़ाने और लागत घटाने के लिए सबसे जरूरी हैं अच्छे बीज, जो कम पानी और विपरीत मौसम में भी बेहतर उत्पादन में सक्षम हो सकें। ऐसे बीजों की 109 नई किस्मों को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने राष्ट्र और किसानों को समर्पित किया है। बीते 10 वर्षों में कृषि परिदृश्य तेजी से बदला है। ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण असंतुलन जैसी समस्याओं के बीच उत्पादकता बढ़ाने की चुनौती खड़ी हो गई है। इस चुनौती से निपटने के लिए अगले पांच वर्षों में हमारा लक्ष्य जलवायु अनुकूल फसलों की 1500 नई किस्में तैयार करने का है। वर्तमान में विज्ञान से ही किसानों का कल्याण संभव है। मुझे अपने कृषि विज्ञानियों पर गर्व है जो जलवायु अनुकूल किस्में तैयार कर रहे हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि कृषि में किए जा रहे नवाचारों से कृषि एवं किसान कल्याण सुनिश्चित होगा। किसान होने के नाते मैं भलीभांति समझता हूं कि बढिया उत्पादन के लिए अच्छे बीज कितने आवश्यक हैं। अगर बीज उन्नत और मिट्टी और मौसम की पकृति के अनुकूल होंगे तो उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि होगी। मोदी जी ने यह समझा और व्यापक विजन के साथ इस दिशा में कार्य करने के लिए मार्गदर्शित किया। विविधता भारतीय कृषि की विशेषता है। यहां कुछ दूरी के अंतराल पर ही खेती का मिजाज बदल जाता है। जैसे मैदानी खेती अलग है तो पहाड़ों की खेती अलग। इन सभी भिन्नताओं और विविधताओं को ध्यान में रखते हुए फसलों की 109 नई किस्में जारी की गई हैं। इनमें खेती की 69 किस्में और बागवानी की 40 किस्में राष्ट्र को समर्पित कर दी गई हैं। भारत को ग्लोबल न्यूट्रिशन हब बनाने और श्रीअन्न को प्रोत्साहित करने के लिए मोदी सरकार पूरी तरह संकल्पबद्ध है। हमारा संकल्प है कि किसान के परिश्रम का उचित मूल्यांकन हो और उन्हें फसलों का उचित दाम मिले, इसके लिए हम न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद कर रहे हैं। किसानों की आय बढ़ाना हमारी प्राथमिकता में है और उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ भारत की चिंता भी रही है कि मानव शरीर और मिट्टी के स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित उत्पादन हो। अब भारत नई हरित क्रांति का साक्षी बन रहा है। हमारे अन्नदाता ऊर्जादाता और ईंधनदाता भी बन रहे हैं। मोदी जी के प्रयासों से खेती के साथ ही पशुपालन, मधुमक्खी पालन, औषधीय खेती, फूलों-फलों की खेती सहित दूसरे संबंधित क्षेत्रों को सशक्त बनाया जा रहा है। पूर्ववर्ती सरकारों की प्राथमिकता में कृषि और किसान रहे ही नहीं। जबकि मोदी जी के नेतृत्व में कृषि क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। वर्ष 2013-14 में कृषि मंत्रालय का बजट 27 हजार 663 करोड़ रुपये था, जो 2024-25 में बढकर 1 लाख 32 हजार 470 करोड़ रुपये हो गया है। यह बजट सिर्फ कृषि विभाग का है। कृषि से संबद्ध क्षेत्रों और फर्टिलाइजर अनुदान के लिए अलग बजट है। मोदी सरकार किसानों को यूरिया और डीएपी सस्ती दरों पर उपलब्ध करा रही है। यूरिया पर सरकार किसानों को करीब 2,100 रुपये अनुदान जबकि, डीएपी के एक बैग पर 1083 रुपये की अनुदान दिया जा रहा है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि से किसान स्वावलंबी और सशक्त हुआ है। फसलों के नुकसान पर भी फसल बीमा योजना किसानों के लिए एक सुरक्षा कवच है। मोदी सरकार में किसान को सशक्त बनाने के लिए बीज से लेकर बाजार तक हर वह फैसला लिया, जो किसानों के लिए खेती को और आसान बनाए। उनकी मुश्किलें कम करे और मुनाफा बढ़ाए। इसी कड़ी में एक लाख करोड़ रुपये की एग्री इन्फ्रा फंड के जरिये कृषि से जुड़ा बुनियादी ढांचा विकसित किया जा रहा है। पूरे देश में 700 से अधिक कृषि विज्ञान केंद्र किसान और विज्ञान को जोड़ रहे हैं। नमो ड्रोन दीदी योजना के जरिये टेक्नोलाजी से दूरदराज की हमारी माताओं-बहनों को भी जोड़ा जा रहा है। कृषि सखियों को प्रशिक्षण देने के पहले चरण में अब तक 35 हजार कृषि सखियों को प्रशिक्षित किया जा चुका है। मोदी जी का विजन है कि भारत कृषि में आत्मनिर्भर बने। इस दिशा में भी रणनीति बनाकर कार्य किया जा रहा है। अगले पांच वर्षों में हम 18,000 करोड़ रुपये की लागत से 100 निर्यात केंद्रित बागवानी क्लस्टर बनाएंगे। किसानों के लिए मंडी तक पहुंच बेहतर बनाने के लिए 1500 से अधिक मंडियों का एकीकरण किया जाएगा। साथ ही, 6,800 करोड़ रुपये की लागत से तिलहन मिशन की शुरुआत कर रहे हैं। सब्जी उत्पादन क्लस्टर बनाने की भी तैयारी है। इससे छोटे किसानों को सब्जियों-फल और अन्य उपज के लिए नए बाजार और बेहतर दाम मिलेंगे। सरकार ने यह संकल्प भी लिया है कि दलहन फसलों में तुअर, उडद और मसूर की पूरी खरीद एमएसपी पर की जाएगी। यजुर्वेद में उल्लिखित है अन्नानां पतये नम: क्षेत्राणां पतये नम: अर्थात अन्न के स्वामी और खेतों के स्वामी अन्नदाताओं को नमन। कृषि पराशर में भी उल्लेख है-अन्न ही प्राण है, अन्न ही बल है और अन्न ही समस्त प्रयोजनों का साधन है। किसानों के बिना इस देश का अस्तित्व ही अधूरा है। इसलिए हमारे प्राचीन शास्त्रों में भी किसानों को प्रणाम किया गया है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ है और किसान उसका आत्मा। हमारे लिए किसान की सेवा भगवान की पूजा है। प्रधानमंत्री मोदी जी के दीर्घकालिक विजन और सर्वांगीण, सर्वस्पर्शी, समावेशी और समग्र विकास वाले सोच के साथ भारत और भारतीय कृषि निरंतर आगे बढ़ रही है। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे किसान भाई-बहन आजादी के अमृतकाल में आत्मनिर्भर भी बनेंगे और समृद्ध संपन्न होने के साथ-साथ देश के अन्न भंडार भरते रहेंगे।

शिवराज सिंह चौहान, केन्द्रीय कृषि-किसान कल्याण, ग्रामीण विकास मंत्री

दाने के साथ पशुधन के निवाले पर भी संकट

प्रदेश के 25 जिलों में जलजला

जयपुर। कहीं सामान्य से ज्यादा बारिश और कही जिलों में सूखे के चलते इस साल हालात अकाल के हो चुके है। कुदरत ने किसानों के साथ पशुधन से मुहं का निवाला छीन लिया है। खेतों में मेहनत पानी-पानी होकर खत्म होने के कगार पर पहुंच चुकी है। यह हालात एक दो जिलों के नहीं, बल्कि, प्रदेश के दो दर्जन से अधिक जिलों में देखने को मिल रहे है। गौरतलब है कि अजमेर, अलवर, अनूपगढ़, बालोतरा, ब्यावर, भरतपुर, बीकानेर, बूंदी, चुरू, दौसा, डीग, धौलपुर, डीडवाना-कुचामन, दूदू, गंगापुर सिटी, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, जैसलमेर, जोधपुर ग्रामीण, करौली, केकड़ी, नागौर, फलौदी, सवाईमाधोपुर और टोंक जिलें में अतिवृष्टि जैसे हालात ज्यादा बारिश ने पैदा कर दिए है। किसानों का कहना है कि खेतों में पानी भरा होने से खरीफ की फसलों में नुकसान शुरू हो गया है। जलभराव से सोयाबीन, मूंग, उड़द, मूंगफली, मक्का सहित दूसरी खरीफ फसलें तबाह हुई है। हालांकि, मुख्यमंत्री भजनलाल और कृषि मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा ने प्रभावित जिलों में किसानों को राहत देने के लिए विशेष गिरदावरी के निर्देश संबंधित जिला प्रशासन को दिए है। किसानों का कहना है कि एक सप्ताह से ज्यादा समय से जारी बारिश के चलते खेत पानी से लबालब है। चारों ओर पानी ही पानी नजर आ रहा है। फसल का नामोनिशान मिट चुका है। नजर आ रहे है तो खेत की मेड़ो पर उगी झाड़िया और फैन्सिंग। हालात यह है कि जिस ड्रेनेज सिस्टम पर जिलों में हर साल करोड़ो रूपए खर्च किए जाते है, वह भी तेज बारिश में नकारा साबित होकर रह गया है। गौरतलब है कि अतिवृष्टि के चलते कई जगह जनधन, पशुधन की हानि भी हुई है। इससे पानी से अकाल के हालात साफ नजर आने लगे है। उधर, दक्षिणी जिलों से मानसून रूठा हुआ है। इस कारण दलहन के साथ मक्का का उत्पादन प्रभावित होने की संभावना है। गौरतलब है कि जल संसाधन विभाग की रिपोर्ट के अनुसार बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, सलूम्बर, सिरोही और उदयपुर में मानसून की कम मेहरबानी से सूखे के हालात पैदा हो गए है। वहीं, चित्तौड़गढ़, जालौर, झालावाड़, राजसमंद और सांचौर के हालात भी बारिश के लिहाज से ठीक नहीं कहे जा सकते है।

यह करें किसान

- मूंग, ग्वार, बाजारा, मोठ बुवाई के साथ 500 पीपीएम थाईयूरिया से बीजों को आधा घंटा भीगो कर उपचारित करे। हाइड्रोजेल को 2-5 किग्रा प्रति हैक्टयर की दर से बुवाई के साथ लाइन में ऊर कर देवें।
- वर्षा सितम्बर के प्रथम सप्ताह में होने पर तारामीरा की बुवाई करें।
- मुरझा हुई ज्वार को पशु को नहीं खिलाएं और ना ही चरने दें।
- तुम्बा, कलिंगडा, आदि फसलों का संग्रहण करके पशुधन को खिलाएं।
- दीमक, कपास में पैराविल्ट, जड़गलन, मूंगफली में कॉलर रॉट और सफेद लट का वैज्ञानिक प्रबंधन करें।

हरे चारे- सब्जियों के बढ़े दाम

अतिवृष्टि से टमाटर, मिर्च, बैंगन, भिंड़ी, मूली सहित दूसरी सब्जी फसलों का नुकसान पहुंचा है। वहीं, हरी चारा फसल भी नष्ट हुई है। इससे बाजार में सब्जियों के थोक और फुटकर भावों में 20-25 रूपए की तेजी आई है।

रेपिड रोविंग सर्वे के निर्देश

उधर, कृषि आयुक्त कन्हैयालाल स्वामी ने बताया कि राज्य में लगातार हो रही वर्षा से फसलों में खरपतवारों की अधिक वृद्धि हो रही है। समय पर कृषक क्रियाएं संपादित नहीं होने और कीट-व्याधि के प्रति मौसम की अनुकूलता होने के कारण फसलों में कीट- व्याधि के प्रकोप होने की प्रबल संभावना है। उन्होने कीट-व्याधि पर सतत निगरानी एवं सर्वेक्षण हेतु वर्ष 2024-25 के लिए रेपिड रोविंग सर्वे के दिशा निर्देश जारी किये गये हैं। उन्होंने बताया कि क्षेत्र में कार्यरत समस्त कृषि विस्तार अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वह नियमित भ्रमण कर कृषकों के सम्पर्क में रह कर फसल प्रबंधन संबंधी तकनिकी जानकारी से किसानों को अवगत करवायें। साथ ही वस्तुस्थिति से उच्चाधिकारियों को अवगत करवाये।

रबी से उम्मीद

मानसून की भारी बारिश से बांधों में जमकर पानी की आवक हुई। लम्बे समय से सूखे पड़े 177 बांध अवरफ्लो हो गए है। वहीं, 356 बांध लबालब हो चुके है। जबकि, 158 बांध अब भी पानी को तरस रहे है। उम्मीद है कि मानसून की रवानगी खाली बांधो में पानी ज्यादा आ सकता है। इससे रबी फसलों को पानी मिलने की उम्मीदें बढ़ गई है।

कही सावन तो कही सूखा

प्रदेश में इस साल मानसून की कही सावन तो कही सूखा जैसी स्थिति के कारण खरीफ फसलों की बुवाई लक्ष्य से 8 फीसदी पिछड़ गई है। एक करोड़ 64 लाख हैक्टयर लक्ष्य के मुकाबले अब तक 92 फीसदी क्षेत्र में ही बुवाई हो पाई है। कृषि जानकारों का कहना है कि अब अधिकांश फसलों का बुवाई समय निकल चुका है। ऐसे में बुवाई का निर्धारित लक्ष्य तक पहुंचाना काफी मुश्किल है। वहीं, अतिवृष्टि के कारण जो फसली क्षति हुई है, इससे अपेक्षित उत्पादन में भी नुकसान उठाना पड़ेगा।

सोयाबीन में गर्डल बीटल से बचाव

गर्डल बीटल और सेमीलूपर कीट नियंत्रण के लिए किसान डाईमिथोएट 30 ईसी. 750 मिली. अथवा थायोक्लोप्रिड 24 एससी. 750 मिली. प्रति हैक्टयर दवा का छिड़काव पानी में घोल बनाकर करें।

बाजरे में फड़का

फड़का कीट नियंत्रण के लिए किसान क्यूनालफॉस 25 ईसी 1 लीटर 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टयर की दर से छिड़काव करें।

फसल बुवाई एक नजर

फसल	बुवाई	फसल	बुवाई
धान	2.81	ज्वार	6.41
बाजरा	41.99	मक्का	9.62
मूंग	22.05	मोठ	8.82
उड़द	2.97	चौला	0.53
तिल	2.02	मूंगफली	8.58
सोयाबीन-	11.22	गन्ना	0.05
कपास	5.13	ग्वार	25.29

(बुवाई लाख हैक्टयर में)

अनार करने लगा किसानों को बीमार

अनार के बगीचों में बड़ रही है फल सड़न की समस्या

जयपुर। इस साल अनार की फसल ने किसानों की आंखों में आंसू ला दिए है। किसान चाहकर भी अपनी फसल को नहीं बचा पा रहा है। महंगे से महंगे कीटनाशक और फंफूदीनाशक का छिडक़ाव भी फसल पर बेअसर साबित हो रहा है। अनार बगीचों की स्थिति को देखते हुए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस साल अनार उत्पादक किसानों को लाखों रूपए का नुकसान होना तय है। क्योंकि, फल फंगस के चलते सड-ग़लकर नष्ट हो रहे है। वहीं, कृषि वैज्ञानिक रोग का प्रकोप थोड़ा बहुत बता रहे है। वहीं, किसानों का कहना है कि बाड़मेर, जैसलमेर, जालौर, जोधपुर सहित दूसरे जिलों में शायद ही कोई ऐसा बगीचा हो, जो फंगस से अछूता रहा हो। किसानों ने बताया कि इस साल बगीचों से रोग का प्रकोप ज्यादा नजर आ रहा है।

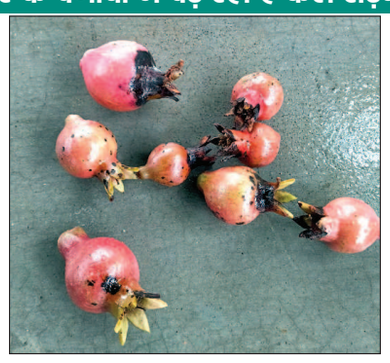

रकबा ज्यादा, विशेषज्ञों की कमी

प्रदेश में 16-18 हजार हैक्टयर क्षेत्र में अनार की खेती हो रही है। अनार की खेती का श्री गणेश हुए दशक से ज्यादा का समय हो चुका है। इसक बावजूद अनार विशेषज्ञों और अनुसंधान केन्द्र की कमी किसानों पर भारी पड़ती जा रही है। राज्य सरकार के उद्यान विभाग के पास ऐसा कोई विशेषज्ञ नहीं है, जो किसानों को रोग-कीट नियंत्रण की सटीक जानकारी दे सके। जानकारी के अनुसार अनार के 70 फीसदी कृषि सलाहकार महाराष्ट्र और 20 फीसदी गुजरात और 10 फीसदी राजस्थान से है।

यह करें किसान

फंगल सड़न कोलेटोट्रीकम / अल्टरनेरिया जैसे रोगजनकों के कारण होती है। इन सड़न के प्रबंधन के लिए, 10-15 दिनों के अंतराल पर निम्नलिखित रासायनिक स्प्रे कर सकते है। एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 20 प्रतिशत एससी + डिफेनोकोनाज़ोल 12.5 प्रतिशत एससी 1 मिली प्रति लीटर पानी। अथवा कॉपर सल्फेट 47.15 प्रतिशत + मैन्कोज़ेब 30 प्रतिशत डब्ल्यूडीजी 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी। अथवा फ्लूओपिराम 17.7 प्रतिशत + टेबुकोनाज़ोल 17.7 पतिशत 2/2 एससी 1 मिली प्रति लीटर पानी अथवा टेबुकोनाज़ोल 50 प्रतिशत + ट्राइफ्लोक्सीस्ट्रोबिन 25 प्रशित डब्ल्यूजी 0.5 ग्राम प्रति लीटर पानी। अथवा क्लोरोथालोनिल 75 प्रतिशत डब्ल्यूपी 2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी। अथवा जीनेब 68 प्रतिशत + हेक्साकोनाज़ोल 4 प्रतिशत डब्ल्यूपी 2.5 ग्रामप्रति लीटर पानी। अथवा हेक्साकोनाज़ोल 5 प्रतिशत ईसी 1 मिली प्रति लीटर पानी। अथवा मैंडिप्रोपैमिड 23.4 प्रतिशत एससी 1 मिली प्रति लीटर पानी (फूल आने पर 2 स्प्रे)

(पौध संरक्षण कार्य अनार अनुसंधान केन्द्र, सोलापुर के अनुसार)

राष्ट्रीय कीट निगरानी प्रणाली का हुआ शुभारंभ

फसल सुरक्षा के साथ बढ़ेगा उत्पादन

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने दिल्ली के पूसा स्थित सुब्रमण्यम हॉल में राष्ट्रीय कीट निगरानी प्रणाली का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि इस प्रणाली के माध्यम से किसान विभिन्न प्रकार के कीटनाशकों के बारे में जान सकेंगे और उनके हानिकारक प्रभाव से अपनी फसलों को बचा सकेंगे। कार्यक्रम में प्रणाली की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि यह प्रणाली एआई तकनीक से लैस है, जो कीटों के प्रबंधन में मदद करेगी और फसलों के नुकसान को कम करने में सहायक होगी। उनका कहना था कि इस नई प्रणाली के माध्यम से फसलों के उत्पादन में सुधार होगा और कृषि विकास को बढ़ावा मिलेगा। इस पहल को किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण कदम बताते हुए चौहान ने कहा कि यह कृषि क्षेत्र में नई तकनीक के उपयोग को प्रोत्साहित करेगा और फसलों की सुरक्षा सुनिश्चित करेगा।

क्वालिटी प्रोडक्ट का करें उपयोग

पेस्ट कन्ट्रोल विक्रेताओं का प्रशिक्षण कार्यक्रम

जयपुर। कृषि विभाग द्वारा पेस्ट कन्ट्रोल विक्रेताओं का एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें जयपुर जिले के 50 पेस्ट कन्ट्रोल लाइसेंसधारी विक्रेताओ द्वारा भाग लिया गया। प्रशिक्षण में अतिरिक्त निदेशक कृषि एलएन बैरवा ने पेस्ट कन्ट्रोल विक्रेन्ताओ द्वारा क्वालिटि प्रोडक्ट का प्रयोग करने और उपभोक्ताओं को संतुष्टी प्रदान करने की बा कही। संयुक्त निदेशक कृषि राकेश पाटनी ने बताया कि विभाग के द्वारा कृषि आदान विक्रेताओं के साथ-साथ अनाधिकृत कार्य करने वाली पेस्ट कन्ट्रोल एजेन्सीयों की जॉच की जा रही है और बिना वैद्य लाइसेन्स कार्य करने वाली पेस्ट कन्ट्रोल एजेन्सीयों के विरूद्ध कीटनाशी अधिनियम व नियमों के तहत कार्यवाही की जा रही है। सभी कीटनाशी अनुज्ञापत्रधारी विक्रेताओं को भी निर्देशित किया है कि पेस्ट कन्ट्रोल लाइसेंस विक्रेताओं को ही हाउस होल्ड पेस्ट कन्ट्रोल से संबंधित दवाओ का विक्रय करे। पेस्ट कन्ट्रोल विक्रेताओं द्वारा स्टॉक रजिस्टर संधारित करने, अनुभवी व्यक्ति द्वारा ही पेस्ट कन्ट्रोल का कार्य करवाने, परिसर पर फस्टएड किट रखने व सुरक्षित पेस्ट कन्ट्रोल अपनाने जैसी जानकारी प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से दी गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कीट वैज्ञानिक मुकेश कुमार निठारवाल ने सुरक्षित पेस्ट कन्ट्रोल नियंत्रण की जानकारी दी।

देश-विदेश

न्यूजीलैंड के साथ बढाएंगे सहयोग

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान और न्यूजीलैंड के कृषि, वानिकी, व्यापार और विदेश मामलों के एसोसिएट मंत्री टॉड मैक्ले के बीच नई दिल्ली में एक उच्चस्तरीय द्विपक्षीय बैठक संपन्न हुई। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य दोनों देशों के बीच बागवानी और कृषि क्षेत्र में सहयोग को मजबूत करना था। बैठक में भारत और न्यूजीलैंड के बीच बागवानी के क्षेत्र में प्रस्तावित मेमोरेंडम ऑफ कॉपरेशन (एमओसी) पर गहन चर्चा हुई। मंत्रियों ने बागवानी में सहयोग को बढ़ावा देने और दोनों देशों के कृषि प्राथमिकताओं को साझा करने पर जोर दिया।

फेलोशिप कार्यक्रम की घोषणा

नई दिल्ली। भारत- आसियान देशों के बीच कृषि संबद्ध विज्ञान में उच्च शिक्षा के लिए परस्पर सहयोग बढ़ाया जाएगा। इसके लिए भारत ने पहल करते हुए आसियान देशों के 50 छात्रों को कृषि से जुड़े क्षेत्रों में मास्टर डिग्री के लिए प्रतिवर्ष फेलोशिप देने की घोषणा की है। इसे शैक्षणिक वर्ष 2024-25 से शुरू किया जा रहा है। परियोजना पांच साल के लिए है। योजना के लिए केंद्र सरकार ने आसियान-भारत कोष के तहत वित्त पोषण की मंजूरी पहले ही दे दी है। चयनित छात्रों को फेलोशिप, प्रवेश शुल्क, रहने का खर्च और आकस्मिकता खर्च दिया जाएगा। इसके तहत भारतीय कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा पेश किए जाने वाले मास्टर्स प्रोग्राम छात्रों को अत्याधुनिक शोध से परिचित कराएंगे।

आईआईटी इंदौर ने तैयार किए दो एप

इंदौर। कृषि क्षेत्र में तकनीक के विकास से किसानों की मदद के लिए आईआईटी-इंदौर ने दो नए मोबाइल एप्लीकेशंस लॉन्च किए हैं। ये एप्लीकेशंस कृषि सेवा और क्रॉपडॉक्टर- किसानों को उनकी फसलों का प्रबंधन अधिक प्रभावी ढंग से करने में सहायता करेंगे। कृषि सेवा ऐप एप्लिकेशन किसानों को फसल स्वास्थ्य और उत्पादकता बढ़ाने के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान करता है। इसमें किसान अपनी फसलों की तस्वीरें अपलोड कर सकते हैं और बीमारियों, कीटों और पोषण संबंधी समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। वहीं, क्रॉपडॉक्टर ऐप विशेष रूप से सोयाबीन फसलों के लिए तैयार किया गया है।

गाय खरीद पर मिलेगा अनुदान

चढीगढ़। हरियाणा सरकार ने देसी नस्ल की 3 से 5 गायों की डेयरी खोलने वाले पशुपालकों को गायों के खरीद मूल्य पर 50 प्रतिशत अनुदान देगी। सीएम नायब सिंह सैनी ने कहा कि छोटे किसानों तथा ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं को अपना काम शुरू करने के लिए हाइटेक व मिनी डेयरी स्कीम चलाई जा रही है। इस स्कीम के तहत 10 दुधारू पशुओं तक की मिनी डेयरी खोलने के लिए पशुओं की लागत पर 25 प्रतिशत सब्सिडी मिलेगी। अनुसूचित जाति के लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाने की स्कीम के तहत दो या तीन पशुओं की डेयरी खोलने पर 50 प्रतिशत सब्सिडी मिलेगी।

कृषि वानिकी मेला कार्यक्रम

आय बढ़ौत्तरी के लिए स्मार्ट कृषि अपनाएं किसान

भीलवाड़ा। कृषि विश्वविद्यालय उदयपुर के कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक ने कृषि वानिकी विषयक किसान मेला कार्यक्रम को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि आय बढौत्तरी के लिए किसान स्मार्ट फार्मिंग अपनाएं। उत्पाद की ज्यादा कीमत प्राप्त करने के लिए उनका मूल्य संवर्द्धन और प्रसंस्करण करें। उन्होने कहा कि आगामी भविष्य मक्का फसल का है। यह दुनिया की सबसे महंगी फसल बनने का अनुमान है। गौरतलब है कि यह मेला कार्यक्रम कृषि विज्ञान केन्द्र, भीलवाडा और टोफी के संयुक्त तत्वावधान में ब्राह्मणों की सरेरी गांव में आयोजित किया गया। कार्यक्रम को अटारी जोधपुर के निदेशक डॉ. जेपी मिश्रा ने भी सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि किसानों की दशा सुधारने के लिए, उनकी दिशा बदलना जरूरी है। इसके लिए कृषि के साथ-साथ खेतों में वानिकी को भी प्रोत्साहित करने की जरूरत है। वहीं, भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर के पूर्व निदेशक डॉ. अमरनाथ शर्मा ने सोयाबीन की उपयोगिता और महत्व पर, विवि के प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. आरए कौशिक ने कृषि यंत्रीकरण, अतिरिक्त निदेशक कृषि डॉ. रामावतार शर्मा ने बीज उत्पादन और कपास की खेती पर प्रकाश डाला। इससे पूर्व टोफी के स्टेट कोर्डिनेटर राधेश्याम जुंजाडिया ने टोफी कार्यक्रम के उद्देश्य और आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए किसानों से पौधरोपण करने की बात कही। मेला कार्यक्रम को केवीके भीलवाड़ा के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सीएम यादव, डॉ. केसी नागर, डॉ. राजेश जलवानिया, कृषि विवि कुलसचिव बीडी यादव ने भी सम्बोधित किया। इससे पूर्व अतिथियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। वहीं, मेले के दौरान किसानों को 400 पपीता के पौधों का वितरण किया गया। कार्यक्रम में 40 प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया गया। मेला में 1800 किसान सहभागिता रही।

संकर सरसों पर व्याख्यान कार्यक्रम

पोषक तत्व प्रबंधन से बढ़ेगी सरसों की उपज

भरतपुर। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर के द्वारा संकर सरसों पर एक व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया। भारतीय सरसों में आर्थिक संकर ओज विषयक इस कार्यशाला के मुख्य अतिथी निदेशालय के पूर्व निदेशक डॉ. धीरज सिंह रहे। इस मौके पर डॉ. धीरज सिंह ने कहा कि पोषक तत्व प्रबंधन को प्रोत्साहित करके सरसों की प्रति हैक्टयर पैदावार को बढाया जा सकता है। वैज्ञानिक अनुसंधान में यह साबित हो चुका है कि पोषक तत्व प्रबंधन अपनाकर प्रति हैक्टयर 25-26 क्विंटल प्रति तक सरसों की उपज प्राप्त की जा सकती है। उन्होने सरसों की रोग प्रतिरोधक संकर किस्मों के विकास पर भी जोर दिया। कार्यशाला को सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. पीके राय ने भी सम्बोधित किया। उन्होने सरसों को अद्भुत फसल बताते हुए कहा कि कृषि वैज्ञानिकों और किसानो की मेहनत से राई-सरसों के उत्पादन में बढौत्तरी दर्ज हुई है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2023-24 के दौरान देश में सरसों का रिकॉर्ड 131. 6 लाख टन उत्पादन हुआ है जो तिलहनी फसलों में सबसे अधिक है। उन्होंने कहा कि भविष्य की चुनौतियों को देखते हुए हमें आधारभूत और रणनीतिक अनुसंधान पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इस कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ-साथ अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना राइ-सरसों के विभिन्न केन्द्रों के वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

भागीदारी बालिकाओं को कृषि शिक्षा प्रोत्साहन योजना

19 हजार कृषि छात्राओं को मिली 35 करोड़ प्रोत्साहन राशि

जयपुर। कृषि क्षेत्र में बुवाई से लेकर रोपण, सिंचाई और कटाई जैसे कार्यों में महिलाएं अग्रणी भूमिका निभाती हैं। इस क्षेत्र में उनके सशक्तिकरण के लिए राज्य सरकार द्वारा अभूतपूर्व फैसले किए गए हैं। कृषि विषय में अध्ययनरत छात्राओं को देय प्रोत्साहन राशि योजना भी बालिकाओं की कृषि क्षेत्र में प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित करने की ऐसी ही एक योजना है। योजना के तहत कृषि संकाय से अध्ययन के लिए 11 वीं कक्षा से लेकर पीएचडी कर रही छात्राओं को 15 हजार से 40 हजार की राशि प्रतिवर्ष दी जा रही है। कृषि आयुक्त ने कन्हैया लाल स्वामी ने बताया की योजना के तहत दिसंबर 2023 से जुलाई 2024 तक अध्ययनरत 19 हजार 662 छात्राओं को 35 करोड 62 लाख रुपये का आर्थिक संबल दे कर कृषि संकाय लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया है।

कृषि संकाय चुनने पर प्रोत्साहन

कृषि आयुक्त कन्हैया लाल स्वामी ने बताया कि योजना के तहत राज्य में कृषि विषय लेकर अध्ययन करने वाली 11वीं एवं 12वीं कक्षा की छात्राओं को प्रतिवर्ष 15 हजार की राशि प्रदान की जाती है। उन्होंने बताया कि कृषि विज्ञान से स्नातक के विषयों जैसे कि उद्यानिकी, डेयरी, कृषि अभियांत्रिकी, खाद्य प्रसंस्करण के साथ ही स्नातकोत्तर (एम.एससी.कृषि) में अध्ययन करने वाली छात्राओं को 25 हजार रुपए प्रतिवर्ष दिये जाते हैं। इसी प्रकार कृषि विषय में पीएचडी करने वाली छात्राओं को 40 हजार रुपये प्रतिवर्ष (अधिकतम 3 वर्ष) प्रोत्साहन राशि दिये जाने का प्रावधान किया गया है।

अनामिका और विभा को मिला संबल

कृषि संकाय में स्नातक की शिक्षा प्राप्त कर रही अनामिका शर्मा, उदयपुर के जनार्दन राय नागर विश्वविद्यालय में बीएससी द्वितीय वर्ष की छात्रा हैं। वे बताती हैं कि योजना के तहत बीएससी के प्रथम वर्ष में राज्य सरकार द्वारा 25 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि दी गई थी। वे बताती हैं कि उन्हें शुरू से ही कृषि के क्षेत्र में अपना भविष्य बनाने की इच्छा थी। वे चाहती थीं कि वे कृषि के क्षेत्र में उन्नत तकनीकों के बारे में जानें और अपने परिवार की आय बढ़ाने में सहयोग करें। राज्य सरकार का धन्यवाद देते हुए अनामिका कहती हैं कि वे स्वयं तो सक्षम हुई हीं हैं और अब वे पढ़ाई के साथ-साथ किसानों को खेती करने की उन्नत तकनीकों, बीज, उर्वरक जैसी सहायक सामग्रियों के बारे में उचित जानकारी भी देती हैं।

डेयरी-खाद्य उद्योग में रोजगार के काफी अवसर

अंतराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

उदयपुर। डेयरी और खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय में डेयरी और खाद्य उद्योग में उद्यमिता विकास, स्टार्ट-अप के अवसर विषयक अंतराष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थी परिषद के पूर्व अध्यक्ष डॉ करुण चंडालिया ने कहा कि डेयरी और खाद्य उद्योग क्षेत्र में रोजगार और स्वरोजागर की कमी नहीं है। सरकार इन क्षेत्रोंको प्रोत्साहित करने के लिए स्टार्टअप को अनुदान मुहैया करवा रही है। महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ लोकेश गुप्ता ने बताया की महाविद्यालय विद्यार्थियों, किसानों, युवाओ और महिलाओ को प्रशिक्षण प्रदान कर तकनीकी कौशल वर्धन कर रहा है। विषय विशेषज्ञ के तौर पर जपेश जयदेवन, आइसक्रीम उद्योग की सम्भावनाओ और चुनौतियों पर अपनी बात रखी। वहीं, डॉ विजय सरदाना ने स्टार्ट-अप से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं और उनके समाधानों को विद्यार्थियों के साथ साझा किया। इसी तरह ए.के त्रिपाठी ने भी नई तकनीकों के समावेश के बारे में चर्चा की और ज्ञान पिपासु विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं को शांत किया। मुख्य अतिथि एमपीयुएटी के कुलपति डॉ अजीत कुमार कर्नाटक ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम में 400 से अधिक पूर्व विद्यार्थियों ने भाग लिया।

पाठक। कपास की फसल ली हैं। पिछले कुछ दिनों से पत्तियों पर लाल बैंगनी रंग के धब्बे नजर आ रहे हैं। ऐसा क्यों हो रहा हैं। कारण सहित निवारण के उपाय बताएं।

जसविन्द्र सिंह, हनुमानगढ़

हलधर टाइम्स। आपने फसल के जो लक्षण बताएं हैं। वह फसल पर हरा तेला प्रकोप के लग रहे हैं। इस रसचूसक कीट के प्रकोप से पत्तियों पर लाल बैंगनी रंग के जले हुए फफोले से बन जाते हैं। पत्तियां सूखकर नीचे गिरने लग जाती हैं। रोग नियंत्रण के लिए इमिड़ाक्लोरपिड 200 एसएल 0.3 मिली अथवा एसिटामिप्रिड़ 20 एसपी 0.4 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बना करके छिड़काव करें।

अनदाता की चिट्ठी

पाठक। उड़द की फसल 5 सप्ताह की हो गई हैं। पौधों की बढ़वार असमान रूप से हो रही हैं। अधिकांश पौधे बौने नजर आ रहे हैं। पत्तियों पर लाल-भूरे रंग के धब्बे नजर आ रहे हैं। इसका क्या कारण हैं। नियंत्रण के उपाय सुझाएं।

मोड़ूलाल, नैंनवा, बूंदी

हलधर टाइम्स। आपने फसल के जो लक्षण बताएं हैं। वह पत्ती मरोड़ रोग के प्रतीत होते हैं। फसल में रोग का प्रकोप लीफ क्रिन्कल विषाणु द्वारा होता है। रोग के शुरूआती लक्षण पत्तियां में एठन, शिराओं की निचली सतह पर लाल-भूरे रंग के धब्बें दिखाई देते है, जो वृन्त (पेटियोल) तक फैल जाते है। खेत में रोग मुख्यतः बीज अथवा रोगी पत्तियों की स्वस्थ पत्तियों पर आपस में रगड़ से फैलता है। नियन्त्रण करने हेतु एसीफेट 1 ग्राम प्रति लीटर अथवा डाइमिथोएट 2 मिली लीटर प्रति लीटर की दर से घोल बना करके छिड़काव करें।

पाठक। मोठ की फसल में फली छेदक कीट का प्रकोप हो गया है। नियंत्रण के बारे में बताएं।

रमेश शर्मा, बीकानेर

हलधर टाइम्स। आपने मोठ में फली छेदक कीट का प्रकोप बताया है। इसके नियंत्रण के लिए मैलाथियॉन 50 ईसी अथवा क्यूनालफॉस 25 ईसी 1 लीटर का

500 लीटर पानी में घोल बना करके प्रति हैक्टेयर की दर से फूल और फली बनते समय छिड़काव करें।

पाठक। चुकंदर की खेती के बारे में विस्तार से बताएं। इसकी बुवाई कब कर सकता हूँ।

सुरेन्द्र सिंह, श्रीगंगानगर

हलधर टाइम्स। उन्नत किस्मः- शुभ्रा, मैगना पोली, ट्रायबल, आईआईएसआर कंपोजिट, रेमान्सकाया चुकंदर की किस्म है। बुवाई के लिए पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से और 3-4 जुताई देशी हल से करते हुए पाटा लगाना चाहिए। अच्छे अंकुरण के लिए नमी और खेत समतल होना चाहिए। बुवाई से पूर्व बीज को कार्बेन्डाजिम अथवा थाइरम 2 ग्राम प्रति किलो बीज दर से उपचारित करना चाहिए। इससे पूर्व बीज को 8-9 घंटे पानी में डुबोकर रखने के बाद 3-4 घंटे सुखाकर रासायनिक उपचार करना चाहिए। इसकी बुवाई सितम्बर माह से की जा सकती है।

पाठक। अमरूद के पौधों पर फल लग रहे है। लेकिन, अंदर से लट निकल रही है। इसका कारण क्या है। उपचार बताएं।

छोटूलाल, बूंदी

हलधर टाइम्स। आपने फल के जो लक्षण बताएं है वह फल मक्खी कीट के प्रतीत होते है। इस कीट का प्रकोप बरसात में ज्यादा होता है। फल मक्खी छिलके के नीचे अण्डे देती है जिनसे मैगट (लट) निकल कर गूदे को खाती है। फल सड़कर गिर जाता है, क्षतिग्रस्त फलों में कीट की सूंडिया भरी रहती है। फलों में किण्वन होने से गूदा सड़ जाता है और पकने से पूर्व ही फल गिरने लगते हैं। कीट नियंत्रण के लिए विष चुग्गा बनाते है, 1 लीटर पानी में 100 ग्राम चीनी अथवा गुड अथवा 10 मिली मैलाथियॉन मिलाकर तैयार करें। इसे मिट्टी के प्यालों में अथवा डिस्पोजल कप में 50 से 100 मिली भरकर बाग में 10 पौधों के मध्य एक के हिसाब से बाग में जगह-जगह पेड़ों पर टांग देवें।

मूंगफली फसल

छोटे में सब कुछ

तम्बाकू की सूंडी (टोबेको केटरपिलर)

यह बहुभक्षी और विनाशकारी कीट है। परन्तु, इसका प्रकोप यदा-कदा ही होता है। मादा पतंगा पत्तियों की निचली सतह पर समूह में अण्डे देती हैं, जिनसे निकली सूंडियाँ झुण्ड बनाकर बहुत तेजी से पत्तियाँ खाती हैं, सूंडियाँ मटमैले हरे रंग की होती है, जिनके शरीर पर लम्बवत् पीली, हरी और नारंगी धारियां, उदर के दोनो ओर काले धब्बे होते हैं। यह कीट दिन में जमीन के अन्दर छिप जाते हैं। रात को नुकसान पहुँचाते हैं।

नियंत्रणः क्यूनालफॉस 25 ईसी 2 मिली प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें अथवा मिथाइल पैराथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण को 20 किग्रा प्रति हेक्टयर के हिसाब से भुरकाव करें।

मिर्च फसल

पर्ण कुंचन (लीफ कर्ल)

यह विषाणु जनित रोग है। सफेद मक्खी औरं थ्रिप्स से फैलता है। इस विषाणु जनित रोग से पौधे बौने रह जाते है। पत्तियॉ सिकुडकर मुड़ जाती है और अनियमित आकार की हो जाती है। नई पत्तियॉ मोटी हो जाती है। रोग ग्रसित पौधों पर फल बहुत कम बनते है, जो छोटे और अनियमित आकार के होते है।

नियन्त्रण - डाइमिथोएट 30 ईसी अथवा मिथाइल डिमेटोन 25 ईसी 1 मिली प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना करके छिड़काव करें।

ग्वारपाठा

पत्ती धब्बा, सिरा झुलसा रोग

यह रोग बरसात के मौसम में आम हैं। पत्तियों पर हल्के भूरे रंग के गोल धब्बे बन जाते हैं । जिनके चारों तरफ निचली सतह पर पीले घेरे होते हैं। उग्र प्रकोप से तने तथा पुष्प शाखाओं पर भी धब्बे बन जाते हैं। इस रोग से पत्तों का 30-40 फीसदी क्षेत्र धब्बों के द्वारा संक्रमित होता हैं। पत्तियों के मुड़ने और झड़ने के कारण पौधा सूखकर गिर जाता है। रोग अलटरनेरिआ अलटरनाटा जीवाणु के कारण होता है।

नियंत्रण- कैप्टान 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

खरीफ प्याज का उत्पादन

अनेक राज्यों प्याज की खेती खरीफ में भी की जाती है। प्याज एक महत्वपूर्ण व्यापारिक फसल है। प्याज का उपयोग प्रतिदिन सब्जी और मसाले के रुप में किया जाता है। प्याज भारत में खायी जाने वाले शल्क कंदीय सब्जी हैं। प्याज में तीखापन एलाइलप्रोपाइल डाय सल्फाइड के कारण होता है। प्याज में कार्बोहाइड्रेट के साथ साथ कई प्रकार के तत्व जैसे सल्फर, कैल्शियम, प्रोटीन और विटामिन सी आदि काफी मात्रा में पाए जाते है। खरीफ में प्याज की खेती से किसानों को रबी प्याज की तुलना में अच्छी आय प्राप्त होती है।

जलवायु- कन्द बनने से पहले 12.8-23 डिग्री सेल्सियस तापमान और कन्द विकास के लिए 15.5 - 21 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त रहता है। प्याज बीज अंकुरण के लिए 20-25 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त रहता है।

भूमि- उपजाऊ दोमट मिट्टी, जल निकास की उत्तम व्यवस्था। अगर भूमि में गंधक की कमी हो तो 400 किलो जिप्सम प्रति हैक्टयर की दर से खेत की अन्तिम तैयारी के समय कम से कम 15 दिन पूर्व मिलायें। खेत की दो-तीन जुताई करके पाटा जरूर लगाएं।

उन्नत किस्में:- एन-53, एग्रीफाउंड डार्क रेड, अर्का कल्याण, बसवंत-780, भीमासुपर।

बीज दर- 12-15 किग्रा प्रति हैक्टयर।

बीजोपचार- कार्बेण्डाजिम 2-3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज ।

पौध तैयार करनाः- पौधशाला का आकार 3 गुना 1 मीटर हो। दो क्यारियों की दूरी 60-70 सेमी रखें। क्यारी जमीन से 15 सेमी. ऊंची उठी हुई हो। खरीफ प्याज के लिए बीज की बुवाई जून माह में की जाती है। जो किसान नर्सरी तैयार नहीं करते है, वह दूसरे किसानों से प्याज की पौध खरीद कर खेत में लगा सकते है। बीज अंकुरण के पश्चात पौध को जड़गलन बीमारी से बचाने के लिए 2 ग्राम थायरम 1 ग्राम बाविस्टीन दवा को 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। बुवाई के लगभग 7-8 सप्ताह बाद पौध खेत में रोपण के लिए तैयार हो जाती है।

पौध रोपणः- अगस्त में । खेत में पौध रोपाई से पूर्व पौध की जड़ों को बाविस्टीन दवा की 2 ग्राम मात्रा को 1 लीटर पानी के घोल में 15-20 मिनट डुबोकर रोपाई करें । ताकि, फसल को बैंगनी धब्बा रोग से बचाया जा सकें।

कतार से कतार की दूरी- 15 सेमी.

पौध से पौधें की दूरी- 8-10 सेमी.

खाद-उर्वरक- 20-25 टन सड़ी गोबर खाद बुवाई से एक-दो माह पूर्व खेत में डाले। 100 किग्रा नत्रजन, 50 किग्रा फास्फोरस, 80 किग्रा पोटाश, सल्फर 25 किग्रा और जिंक 5 किग्रा. प्रति हैक्टयर। नत्रजन की शेष मात्रा को 2 बरबर भागों में बांटकर रोपाई के 30 दिन और 45 दिन बाद छिड़क कर दें।

डॉ. श्वेता सोनी, डॉ. सुनील कुमार, बांदा कृषि-प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा, उप्र.

वर्षाकालीन कीटों से फल बगीचों की सुरक्षा

वर्षा ऋतु में कीट-रोग का प्रकोप फलदार पौधों में ज्यादा होता है। क्योंकि इस ऋतु में तापमान कम और आर्द्रता अधिक होती है। कीट-रोग के चलते फल की गुणवत्ता में कमी आती है। साथ ही, किसान को बाजार में उत्पाद की उचित कीमत नहीं मिल पाती है। इस ऋतु में अमरुद, अनार, आम, नींबू, पपीता, आंवला, खजूर, फालसा, कटहल आदि फसल में फलन होता है। आलेख में कीट-रोग नियंत्रण की जानकारी दी गई है।

कीट

फ ल मक्खी : नियंत्रण हेतु डाइमिथोएट 0.03 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर के फल मक्खी के अंड़े देने से पूर्व छिड़काव करें। प्रौढ़ को मारने के लिए मिथाईल यूजेनॉल ट्रैप (25 ट्रेप प्रति हेक्टयर) का प्रयोग करें।

अमरूद-आम का छाल भक्षक : कोलतार अथवा केरोसिन 1:2 की पट्टी आधार से 3 फुट ऊंचाई तक बांधे। लोहे के तार से छिद्र को साफ करें। छिद्र में केरोसिन तेल डालकर छिद्र को मिट्टी से बंद करें।

नींबू का सिट्रस साईला : थायोमैथाक्साम 0.32 ग्राम प्रति लीटर पानी का छिड़काव कली फूटने के समय करना चाहिए। आवश्यकता होने पर 15 दिन बाद पुनः इस छिड़काव को दोहराया जा सकता है।

नींबू की काली-सफेद मक्खी : अत्यधिक सिंचाई और नत्रजन का प्रयोग नहीं करें। इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 0.5 मिलि प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर कर पर्णीय छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर 15 दिन बाद 10 मिली प्रति लीटर पानी नीम तेल का छिड़काव करें।

नींबू की तितली : नियंत्रण के लिए लार्वा को पकड़ कर नष्ट कर दे। 0.1 ग्राम कार्बोरिल प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

अनार का रसचूसक पतंगा : शाम के समय बगीचे में धुंआ करें। जहरीला दाना (95 प्रतिशत शीरा अथवा गुड और 5 प्रतिशत मैलाथियान) बनाकर मिट्टी के बड़े बर्तन में रख कर ऊपर बल्ब जला दे। पतंगे प्रकाश की तरफ आकर्षित होंगे और नीचे गिर कर मर जाएंगे।

चीकू का पत्ती लपेटक : नियंत्रण हेतु मिथाईल डिमेटान 1 मिली प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

कुष्माण्ड फसलों में रोग नियंत्रण

कद्दू वर्गीय सब्जियों में मुख्य रूप से खीरा, लौकी, काशीफल, करेला, खरबूज-तरबूज आते हैं। इन सबका मानव आहार में महत्वपूर्ण योगदान है। इनका उपयोग सब्जी और सलाद के रूप में किया जाता है। इन फसलों में विभिन्न प्रकार के रोग और कीड़े लगते हैं, जिनका प्रभावी नियन्त्रण कर उचित लाभ कमाया जा सकता है। आर्द्रपतन, मृदुरोमिल आसिता, फल विलगन, चूर्णिल आसिता, ष्यामवर्ण, मोजेक, आदि कद्दू वर्गीय फसलों के प्रमुख रोग हैं।

आर्द्रपतन: यह रोग पिथियम कवक द्वारा होता है, जिसके कारण नर्सरी में ही पौध नष्ट हो जाती है। इस रोग में मुख्यत: बीज का अंकुरण नहीं होता है और अगर होता है तो भूमिगत बीजांकुर विगलन हो जाता है। भूमि की सतह पर आने पर पौधा अचानक गिर पड़ता है। कभी-कभी पौधे की पत्तियाँ मुरझाकर सूख जाती हैं। इस कारण नर्सरी में खाली जगह बन जाती है।

नियंत्रण: मृदा का कैप्टान अथवा कॉपर सल्फेट अथवा फॉर्मेलीन (0.2 प्रतिशत)से उपचार करें। बीजों को गहरा नहीं बोए। बीजोपचार थाइरम 1.25 ग्राम अथवा टाईकोडरमा बीरीडी 6 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से करे। बुवाई से पूर्व ट्राइकोडर्मा 2.5 किलोग्राम प्रति हैक्टयर की दर से 100 किग्रा. अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर भूमि में मिलावें।

मृदुरोमिल आसिता: रोग के लक्षण दिखाई देने पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण के घोल का छिड़काव करना चाहिए। खीरे की पामैटो किस्म में यह रोग कम लगता है।

फल विलगन: खेत में पानी का भराव नहीं होना चाहिए। रोग के उग्र होने पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करना चाहिए।

चुर्णिल आसिता: गंधक का भुरकाव एक हैक्टयर में 25-30 किलोग्राम की दर से करना चाहिए। कैराथेन का छिड़काव 0.1 प्रतिशत की दर से करने पर रोग रुक जाता है। 15-15 दिन के अंतराल पर 3-4 छिड़काव करने चाहिए।

मोजेक: मेटासिस्टॉक्स 0.1 प्रतिशत का छिड़काव 15-15 दिन के अंतराल पर करना चाहिए। फ ल आने पर छिड़काव नहीं करना चाहिए।

दिव्या गुर्जर, पिंकी शर्मा, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, जयपुर

कृषि सलाह

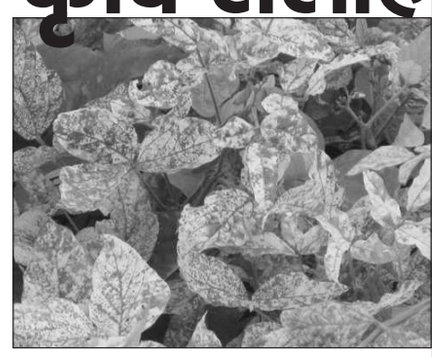

किसान भाईयों कृषि कार्यों को समय पर करने से और उन्नत कृषि विधियां अपनाने से कृषि से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। समय पर कृषि क्रियाएं करने से रोग व कीटों का आक्रमण कम हो जाता है तथा इनसे होने वाली हानि को रोककर उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है। किसानों के लिए कृषि कार्यों में इस सप्ताह 19 अगस्त से 25 अगस्त तक किए जाने वाले कृषि कार्य निम्न हैं।

- पपीता पौध की रोपाई का यह उचित समय है। गड्ढे में रोपाई पूर्व 10 किग्रा अच्छी सड़ी हुई गोबर खाद, 300 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट और 50 ग्राम क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण मिला देवे । स्वस्थ और ओजस्वी पौधे काम में लेवे। रेड लेडी 786, ताईवान, कुर्ग हनी-ड्यु उन्नत किस्में हैं।
- भिण्डी फसल में पीतशीरा मोजेक रोग के प्रकोप की सम्भावना है। इस रोग में पत्तियॉ चितकबरी होकर प्यालेनुमा शक्ल की हो जाती है। इस रोग का संचार सफेद मक्खी नामक कीट से होता है। इसके नियंत्रण हेतु फूल आने के पहले तथा फूल आने के बाद मैलाथियॉन 50 ईसी एक मिली प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें।
- मूंगफली की फसल में बादल छाये रहने के कारण टिक्का रोग के फैलने की सम्भावना है। इस रोग में पत्तियों पर मटियाले रंग के गहरे भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते है। इस रोग की रोकथाम के लिये बाविस्टिन आधा ग्राम अथवा मैन्कोजेब 2.0 ग्राम के प्रति लीटर पानी के घोल का छिडकाव करें। छिड़काव मौसम के खुलने पर ही करें।
- मूंग मोठ और चंवला की फसल में चित्ती जीवाणु रोग के प्रकोप के कारण छोटे गहरे भूरे रंग के धब्बे पत्तों पर बन जाते है। रोग के लक्षण दिखाई देते ही स्ट्रेप्टोसाइक्लिन एक ग्राम और 20 ग्राम ताम्रयुक्त कवकनाशी का 10 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। छिड़काव मौसम के खुलने और नमी में कमी होने पर ही करें। आवश्यकतानुसार छिडकाव दोहरावें।
- करेला, तुरई, टिण्डा, ककडी, बैंगन और टमाटर में फल छेदक कीट के नियंत्रण हेतु प्रभावित फलों को तोड़कर भूमि में गाड़ कर नष्ट कर देवें तथा मैलाथियॉन 50 ई.सी. एक मि.ली. प्रति लीटर पानी के घोल का छिडकाव करें तथा कम से कम 3 दिन तक फल खाने के प्रयोग में नहीं लेवें। छिड़काव मौसम के खुलने पर ही करें ।

सब्जी बीजोत्पादन में पृथक्करण दूरी

शुद्ध बीज पैदा करने के लिये एक प्रजाति की फसल को दूसरी प्रजाति से निश्चित दूरी पर बुवाई करनी चाहिये। ताकि, एक प्रजाति के परागकण दूसरी प्रजाति की फसल को सकुंचित नहीं कर सकें। सब्जियों के परागण व्यवहार के आधार पर ही विभिन्न फसलों में पृथक्करण दूरी (आइसोलेशन डिस्टेंस) भी निश्चित की गयी है। जो निम्न प्रकार है...

समूह (फसल)	न्यूनतम दूरी (मी.)	
	आधार बीज	प्रमाणित बीज
गोभी वर्गीय फसल		
सभी प्रकार की गोभी	1600	1000
फलदार फसल		
बैंगन,	200	100
मिर्च - शिमला मिर्च	400	200
भिन्डी		
टमाटर	50	25
बल्ब फसल		
लहसुन	10	5
प्याज	1000	500
जड़ वाली फसल		
चुकंदर	1600	800
गाजर	1000	800
मूली, शलगम	1600	1000
कंदमूल फसल		
शकरकंद, आलू	10	5
प्रकन्द (राइजोम) फसल		
अदरक, हल्दी	10	5
फलीदार फसल		
ग्वार, लोबिया, राजमा	50	25
-सेम		
मटर	10	5
पत्तीदार सब्जी		
चौलाई	400	200
पालक	1600	1000
धनिया	800	400
मेथी	50	25
कद्दू वर्गीय फसल		
सभी कद्दू वर्गीय सब्जियाँ	1000	500

पृथक्करण दूरी घटाने की तकनीक

जब सिफारिश की गई अलगाव दूरी प्राप्त करना संभव नहीं हो तो कुछ ऐसी विधियां हैं, जो दूरी कम करने के लिए इस्तेमाल की जा सकती हैं। यह अलगाव दूरी को अनदेखा करने की तकनीक नहीं हैं। बल्कि, दूरी को कम करने के लिए है। जब वांछित न्यूनतम दूरी प्राप्त करना संभव नहीं हो तब निम्नलिखित तकनीक का पृथक्क रण दूरी कम करने हेतु इस्तेमाल किया जा सकता है।

ब्लॉक में बिजाई (रोपाई)

पंक्ति यों के बजाय ब्लॉक में फसल की बुवाई करने से विदेशी पराग के फसलों पर आने की सम्भावना कम हो जाती है। ब्लॉक रोपण में पंक्ति रोपण की तुलना में बहुत छोटी परिधि भी है।

शिखर पुष्पन

कम पुष्पन के समय फूलों का परागणक का अनुपात अपेक्षाकृत स्थिर रहता है। परन्तु जब फूलों की संख्या अधिकतम की ओर बढ़ती है, एक बिंदु तक पहुंचा जा सकता है जिसमें फूलों का अनुपात परागणक में बढ़ जाता है। यह दो अलग-अलग किस्मों के बीच क्रॉस-पोलिनेशन की मात्रा कम करने में मदद करता है।

बाधा फसलों का उपयोग

बाधा फसल विभिन्न तरीको से कार्य करती है जैसे वह परागणक के लिए एक भौतिक अवरोध प्रदान करते हैं, उड़ान की दिशा में बदलाव करके, परागणक को वैकल्पिक पराग प्रदान करके विचलित करते हैं, और वह हवा में एक विशिष्ट खुशबू जोड़ते हैं , जो मुख्य बीज फसल से परागणक को आकर्षित कर सकते हैं।

समय अलगाव

उपरोक्त सभी तकनीक अलगाव (अलगाव दूरी) पर आधारित हैं। लेकिन, समय अलगाव एक और विकल्प है। समय अलगाव के मामले में, बीज की बुआई इस तरह से की जाती है कि बीज उत्पादन करने वाली फसल के फूल एक ही समय में एक ही किस्म की पड़ोसी फसल अथवा एक ही फसल अथवा संबंधित प्रजाति के दूसरी किस्म के फूलों के साथ नहीं आते हैं।

आय बढ़ोत्तरी के लिए मिश्रित खेती

फलदार पौधों के मध्य कम बढ़वार वाली फसलों का उत्पादन करके किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। बगीचे में एक फसल के मध्य दूसरी फसलों के उत्पादन को ही इंटर क्रॉपिंग कहा जाता है। गौरतलब है कि बगीचे में लगाये जाने वाले पौधो से 4-5 वर्ष बाद आमदनी होना शुरू होती है। इन वर्षो में किसान बगीचे के मध्य अंतरवर्ती फसलों की बुवाई करके आय के स्तर को बनाये रख सकता है।

यह रखे सावधानी

- फसल लेने के लिए गहरी जुताई नहीं करें । अन्यथा फलदार पौधों की जड़ को नुकसान पहुंचने की संभावना रहती है। फलदार पौधे के चारों ओर ढ़ाई फीट का क्षेत्र छोड़कर ही फसल लेनी चाहिये।
- उन्ही अंतरवर्ती फसल का चयन करें जो शीघ्र पकने वाली हों। साथ ही, छोटी और उथली जड़ वाली हों।
- अंतरवर्ती फसल में खाद, उर्वरक, पानी और पौध संरक्षण जैसे कार्यो का विशेष ध्यान रखें। निराई-गुड़ाई के समय अवांछित पौधों को अलग करें।
- अंतरवर्ती फसल ज्यादा बढ़वार वाली नहीं हो।
- ऐसी फसल का चयन करें जिनमें कीट-रोग नियंत्रण का तरीका और रसायन फलदार पौधो में भी कारगर हो।
- फलदार पौधों में फूल और फल बनना शुरू होने के साथ ही फसल उगाना बंद कर देना चाहिए।
- फसल की स्थान बदलकर बुवाई करें।
- अंतरवर्ती फसल की सिंचाई यथा संभव फलदार पौधों के अनुरूप होनी चाहिये।
- बगीचे में सब्जी, दलहन और हरा चारा फसल का ही उत्पादन करें।

फलदार पौधेवार अंतरवर्ती सब्जियों का विवरण

पौधे	खरीफ	रबी
आम	बैंगन, टमाटर, मिर्च, चंवला, ग्वार, पपीता आदि	मटर, गोभी, प्याज, मैथी, पालक, धनि
अमरूद	लोबिया, ग्वार, मूँग, उड़द	गोभी, मटर, मैथी, मूली, गाजर, बरसीम
अनार	मूँग, लोबिया, सब्जियाँ व दालें	मटर, चना, मूली, गाजर
आँवला	मूँग, लोबिया	मटर, चना, मूली, गाजर
बेर	ग्वार, मूँग, लोबिया, मोठ, चंवला	मटर, जीरा, मिर्च
नींबू	लोबिया, सनई, ढैंचा, पपीता, करेला, सोयाबीन, सेम, टमाटर, भिण्डी	गाजर, मूली, मटर, चना, मैथी

फलदार बगीचे को बनाये आकर्षक

प्रदेश में फलदार पौधो को लगाने का उपयुक्त समय बरसात का मौसम माना जाता है। फलदार पौधे बहुवर्षीय होते है इसलिए फलों के बगीचे वैज्ञानिक पद्धति से ही लगाये। समान्यतया, फलों के बगीचे वर्गाकार, आयताकार, त्रिभुजाकार, षट्भुजाकार और पंचवृक्षीय विधि से लगाये जाते है। इन विधियों से लगाने पर बगीचे में एकरूपता, कृषण क्रिया में आसानी और सुन्दर दिखाई देते है। किसान भाई सितम्बर माह के प्रथम सप्ताह तक बगीचों की स्थापना कर सकते हैं।

गड्ढों की खुदाई और भराई की विधि

गड्ढों की भराई, खुदाई के 15-20 दिन बाद करें। गड्ढों की भराई के लिए, खुदे हुये गड्ढे की 50 सेमी. ऊपरी मिट्टी में अच्छी तरह सडी हुई गोबर की खाद और एक किलो सिंगल सुपर फास्फेट मिलाकर काम में लें। दीमक के बचाव के लिए क्यूनॉलफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण को 100 ग्राम प्रति गड्ढे के हिसाब से डाले। गड्ढे को मृदा सतह से लगभग 50 सेमी. ऊपर तक भरे। क्योंकि, पानी देने पर मिट्टी नीचे बैठ जाती है। गड्ढों की भराई के तुरन्त पश्चात यदि वर्षा नहीं हो तो सिंचाई करें।

पौध रोपण का तरीका

फलदार पौधो के रोपण के लिए बरसात का मौसम बहुत अच्छा रहता है। प्रायः रोपण के लिए एक वर्ष की आयु के पौधो को ही चुनना चाहिए। सर्वप्रथम पौध को लाकर छायादार स्थान पर रखकर पानी दे देना चाहिए। पौध रोपण की दृष्टि से शाम का समय उचित रहता है। क्योंकि, रात के समय तापमान कम रहने से पौधे की जड़े जमीन में अच्छी तरह मिल जाती है। पौधे को लगाने के लिए गड्ढे से पौध के गोले के आकार में मिट्टी निकाल लें। यदि पौध घास में लिपटी हो तो घास अच्छी तरह हटा ले। पोलिथीन में हो तो ब्लेड से चीरा लगाकर थैली हटा लें। उसके बाद पौध को निकली हुई मिट्टी के स्थान पर रोप दे। मिट्टी को अच्छी तरह दबा दे। ताकी, हवा नहीं रह पायें। पौधा गड्ढे में उतनी गहराई पर लगाना चाहिए। जितनी गहराई तक गमले अथवा पोलिथीन में हो। पौधा लगाने के पूर्व उसकी अधिकांश पत्तियाँ तोड़ देनी चाहिए। लेकिन, ऊपरी भाग की चार-पाँच पत्तियाँ छोड़ दे। पौधे के तने के पास थोड़ी-थोड़ी मिट्टी लगाकर ढलान बना दे, जिससे पानी तने के संपर्क में नहीं आए।

पौध रोपण के पश्चात देखभाल

- **पौध** रोपण के सिंचाई पहली आवश्यकता होती है। रोपण तुरन्त बाद हल्की सिंचाई करे। रोपण के एक महीने तक 2-3 दिन के अन्तराल पर और उसके बाद एक सप्ताह के अन्तराल पर सिंचाई करे। सिंचाई में उतना ही पानी दे कि मिट्टी में नमी बनी रहे और वर्षा होने पर पानी कम दे।
- पौधा लगाने के बाद लकड़ी का सहारा देना चाहिए। ताकि, तेज हवा से टूटे नहीं।
- वर्षा ऋतु में पौधों के चारों तरफ बहुत खरपतवार उग जाते है। जिससे पौधो की वृद्धि पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए उचित समय पर निराई-गुड़ाई करके खरपतवारों को निकाल दे। जिससे मृदा में वायु संचार भी बढ़ेगा।
- छोटे फलदार पौधो को साल में एक बार खाद अवश्य दें। इसके लिए नाइट्रोजन युक्त खाद और अच्छी तरह सडी हुई गोबर की खाद दे। खाद देने के बाद हल्की सिंचाई करे।
- एक वर्ष तक पौधे से कोई टहनी नहीं तोड़े। क्योंकि, पत्तियाँ अधिक होने से भोजन अधिक बनेगा, जिससे पौधे को मजबूती मिलेगी।
- निरंतर कटाई-छटाई करके पौधे को अच्छा आकार दे। जिससे पौधा देखने में अच्छा लगे। साथ ही, कटाई-छंटाई उचित फलन और विकास के लिए भी जरूरी है।
- दीमक से बचाव के लिए 1 लीटर क्लोरपायरीफॉस 20 ईसी दवा प्रति हैक्टयर की दर से सिंचाई के साथ देवे।
- सर्दी और गर्मी के मौसम में नए पौधों को पाले और लू से बचाने के लिए पौधे के चारो तरफ सरकंडा अथवा घास-फूस कि टाटियाँ बाँध दे । पाले से बचाने के लिए सिंचाई करे। गंधक का तेजाब 0.1 प्रतिशत का घोल बनाकर (1 एमएल प्रति ली. पानी में) 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करे। इसके छिडकाव के लिए प्लास्टिक कि टंकी ही कम में लेवे।

आजादी के बाद भारतीय कृषि के बढते कदम

स्वतंत्रता के बाद कृषि ने देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लगभग 58 प्रतिशत आबादी कृषि पर ही निर्भर है। आजादी के बाद प्राथमिक चुनौतियों में से एक भूमि वितरण और स्वामित्व था। अधिकांश किसानों के पास छोटी और खंडित जोत थी। इस असमानता को दूर करने के लिए राज्यों ने काश्तकारी सुधार और भूमि जोत की अधिकतम सीमा जैसे उपायों को लागू किया। भारतीय कृषि की मानसून पर निर्भरता को देखते हुए और पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए बांधों और नहरों जैसी सिंचाई परियोजनाओं को बढ़ावा दिया। वर्ष 1950 में खाद्यान्न उत्पादन मात्र 50 मिलियन टन था। देश खाद्य आयात पर निर्भर था। कृषि वैज्ञानिकों और किसानों के अथक प्रयासो, सरकारी नीतियों से 1966-67 में शुरू हुई हरित क्रांति से खाद्य उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। बीजों की उच्च उपज देने वाली किस्मों, आधुनिक कृषि तकनीकों और सिंचाई से फसल उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि हुई। गेहूं, चावल और कई प्रमुख फसलों में देश आत्मनिर्भर हो गया। उचित भंडारण, बुनियादी ढांचे में बदलाव, मशीनीकरण, डिजिटलीकरण के साथ ही आपूर्ति श्रृंखला द्वारा किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिलने लगा। कृषि

में प्रौद्योगिकी के प्रयोग से उत्पादकता और दक्षता में सुधार हुआ है। आनुवांशिकी, सटीक खेती और जैव प्रौद्योगिकी ने बहुत चुनौतियों का समाधान करने में मदद की। मुख्य फसलों से परे कृषि उत्पादन में विविधता लाने के प्रयास किए गए हैं। बागवानी-फूलों की खेती, मशरूम, शहद, दूध, मछली, अंडा और मूल्य संवर्धन आदि द्वारा किसानों की वैकल्पिक आय बढी और पारंपरिक फसलों पर दबाव कम हुआ। विगत 6-7 वर्षों में कृषि क्षेत्र 4.6 प्रतिशत की दर से बढ़ा। जिसे अमृतकाल में उतरोत्तर बढाना समय की मांग है जो अनुसंधान, शिक्षा, नवाचार आदि से ही संभव हैं। पर्यावरण,जलवायु परिवर्तन, कुपोषण, पशुपालन आदि को ध्यान में रखते हुए अब टिकाऊ कृषि पद्धतियों, फसल विविधिकरण, मृदा सुधार, जैविक खेती, संरक्षण कृषि और एकीकृत फसल प्रबंधन आदि को विकल्प के रूप में बढ़ावा देना महत्वपूर्ण हो गया है।

एक नजर कृषि

- दूध, काजू, नारियल, चाय का सबसे बड़ा उत्पादक
- जूट, दाल, अदरक, हल्दी, काली मिर्च, मसाले केला, अंगूर, पपीता, टैपिओका, नींबू, गोभी और अन्य ब्रैसिका।
- गेहूं, चावल, चीनी, मूंगफली और फलों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक।
- तम्बाकू का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक
- मशीनीकरण के कार्यान्वयन में तीसरा सबसे बड़ा देश ।

उत्पादन एक नजर

- खाद्यान्न उत्पादनः 50 से 330.5 मिलियन टन, 6 गुणा
- बागवानी उत्पादनः 25 से 347.2 मिलियन टन, 13 गुणा
- मसाला उत्पादनः 0.02 से 11 मिलियन टन
- दूध उत्पादनः 17 से 210 मिलियन टन, 12 गुणा
- मछली उत्पादनः 0.75 से 14.2 मिलियन टन, 14 गुणा
- अंडा उत्पादन : 1.8 से 122 अरब
- गन्ना उत्पादनः 57 से 431 मिलियन टन
- कपास उत्पादनः 3 से 32 मीटर गांठें
- तिलहन उत्पादनः 5 से 38 मिलियन टन
- शहद उत्पादनः 700 से 133000 टन

भारत 50 बिलियन अमेरिकी डॉलर (2022-23)के साथ कृषि उत्पादन और निर्यात में दूसरा सबसे बड़ा देश है। दुनिया के शीर्ष 5 शुद्ध निर्यातकों में से एक।

डॉ एसआर मालू, डीन, पेसिफिक कृषि महाविद्यालय, उदयपुर

बेर बगीचें में शस्य क्रिया

बेर में पुष्प और फल झड़ने की समस्या काफी अधिक पाई जाती है । जिसका मुख्य कारण बेर उद्यान का उचित प्रबन्धन नही करना है। कृंतन नहीं करना, जल्दी अथवा देर से कृंतन करना, पुष्पन के समय थांवला भर सिंचाई करना, पुष्पन के समय अधिक तापमान (38- 42सें.) होने से परागण क्रिया से पूर्व ही सूख कर पुष्प अथवा छोटे-छोटे फल का गिर जाना आदि कुछ प्रमुख कारण हैं। जिससे बेर के उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। बेर में नियमित और अच्छी पैदावार के लिए निम्नलिखित वार्षिक कार्यक्रम अपनाया जाना चाहिए।

अगस्त : उद्यान में प्लानोफिक्स (1 मिली प्रति 3 लीटर पानी) का छिड़काव करें।

सितम्बर : खरपतवार नियंत्रण और छाछ्या रोग का प्रबंधन करें।

अक्टूबर : जब फल मटर आकार के हो, तब कार्बोरिल 50 50 डब्ल्यूपी 4 ग्राम अथवा मिथाईल डिमेटॉन 25 ईसी अथवा क्यूनालफॉस 25 ईसी 2 मिली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। दूसरा छिड़काव 15 दिन बाद दोहराएं। प्लानोफिक्स (1 मिली प्रति 3 लीटर पानी) का भी घोल बनाकर छिड़काव करे।

नवम्बर : फलमक्खी से बचाने के लिए दूसरा छिड़काव करें। इन दिनों में बेर पकने लगते हैं। उन्हें पक्षियों से बचाना चाहिए।

दिसम्बर : पौधों को सिंचाई देंवे। क्योंकि, इस माह में फल विकास की अवस्था में रहते हैं। फल झड़ने की स्थिति में प्लानोफिक्स (5 मिली प्रति 15 लीटर पानी) का छिड़काव करें। फल गुणवत्ता सुधार हेतु एनपीके पॉलिफिड (50 ग्राम प्रति 15 लीटर पानी) का घोल बनाकर छिड़काव करे। इस माह में एक छिड़काव रिडोमिल का घोल तैयार करके आवश्यकता के अनुसार दे। जंगली बेर के पेड़ों में बढ़िया किस्म की कली लगाकर तैयार करनी होती है। उनका तने से ऊपर का भाग इस महीने में काट दे।

जनवरी : पर्याप्त सिंचाई दें। फल मक्खी नियंत्रण के लिए मिथाईल डिमेटोन 25 ईसी 2 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करे। चूर्णी फफूंद नियंत्रण हेतु सल्फर पाउडर 25 किग्रा प्रति हैक्टयर की दर से भुरकाव करें। बेर के जंगली पेड़ों को बढ़िया किस्मों की चोटी (शिखर रोपण) लगाने के लिए इसी महीने में काट लेना चाहिए।

फरवरी : अगेती किस्म के फल पकने लग जाते हैं। अत: फ ल को उचित प्रकार से तोड़ना चाहिए। उन्हें पक्षियों से बचाना चाहिए।

मार्च : पेड़ों से फल तोड़कर श्रेणीकरण करने के बाद बाजार में विपणन करें। फल सुखाकर कैण्डी तैयार की जा सकती है।

अप्रैल : यदि बेर नाशक भृंग ने आक्रमण कर दिया हो तो उसकी रोकथाम करनी चाहिए। बेर के पौधे उगाने के लिए स्वस्थ जंगली बेर से एकत्र किये गये बीज को जहां पेड़ पर कली लगाकर उगाने हो। वहीं पर अथवा नर्सरी के थैलियों में बुवाई कर दें।

सोयाबीन में पोषक तत्वों का प्रबंधन

लक्षणों के आधार पर पोषक तत्वों की न्यूता को पहचानना कठिन हो जाता है। क्योंकि, विपरीत वातावरण, रोग कीट आदि से उत्पन्न होने वाली व्याधियों के कुछ लक्षण इन से मिलते जुलते हैं। ऐसे में खेत में दिखाई पड़ने वाले इन लक्षणों के आधार पर पोषक तत्वों की न्यूता को पादप विश्लेषण, रासायनिक ऊतक परीक्षण अथवा मृदा परीक्षण से सत्यापित कर लेना चाहिए। प्रदेश के दक्षिणी जिलों में खरीफ मौसम में सोयाबी मुख्य फसल है। सोयाबीन पौधों की पत्तियों पर पोषक तत्वों की कमी के लक्षण प्रकट होने पर उनका उर्वरक उपयोग कर निदान किया जा सकता हैं। जो निम्न अनुसार है-

पूर्ति के साधनः म्युरेट ऑफपोटाश, सल्फेट ऑफ पोटाश, सल्फोमैग, एनपीके. उर्वरक, कार्बनिक खादें।

नाइट्रोजन की कमी

पुरानी पत्तियों हल्के पीले रंग से लगभग सफेद रंग की हो जाती हैं।प्रभावित पौधों में पत्तियों के पर्णमर जाते हैं। पत्तियों हल्के भूरे रंग की होकर गिर जाती हैं।

पूर्ति के साधनः यूरिया, अमोनियम सल्फेट, कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट, एनपी. और एनपीके उर्वरक, ब्रैडी-राइजोबियम जैव उर्वरक, कार्बनिक खादें।

फॉस्फोरस की कमी

पुरानी पत्तियां हल्के नीले-रंग की हो जाती हैं। जिन पर भूरे रंग के चकते उभरते हैं, चकतों के चारों ओर पीले रंग का घेरा बन जाता है। जड़ विकास रुक जाता है। फसल देर से पकती है।

पूर्ति के साधनः सिंगल सपुर फ ास्फेट, डीएपी, मोनोअमोनियम सल्फेट, रॉक फ ास्फेट, एनपी., एनपीके, पीएसबी., जैव उर्वरक, कार्बनिक खादें।

पोटैशियम की कमी

पुरानी पत्तियों के सिरे से पीलापन शुरू होकर किनारों के साथ अन्दर की तरफ बढ़ता है। पत्तियों पर शिराओं के मध्य भाग में किनारों के पास हल्के-भूरे रंग के चकते बनते हैं।

सल्फर की कमी

सर्व प्रथम नई पत्तियॉ प्रभावित होती हैं। नई पत्तियॉ पील रंग की दिखाई देती हैं। पूरी पत्ती पर समान रुप से प्रभावित होती है। शिराये स्पष्ट दिखायी नहीं देती है।

पूर्ति के साधनः अमोनियम सल्फेट, सिंगल सुपर फास्फेट, जिप्सम, गंधक चूर्ण, कार्बनिक खादें।

जिंक की कमी

कमी के लक्षाण, सर्वप्रथम बीच की पत्तियों से प्रारम्भ होते हैं। पत्ती की मध्य शिराओं वाले भाग में हल्के पीले रंग के चकते बनते हैं।अधिक कमी होने पर मध्य शिराओं के बीच का सारंग के धब्बे बनते हैं।

पूर्ति के साधनः जिंक सल्फेट, जिंक की लेट्स कार्बनिक खादें।

आयरन की कमी

नई पत्तियों की शिराओं के बीच से हरे रंग गायब होना। शिराए हरी और स्पष्ट दिखाई देती हैं। अधिक कमी होने पर नई पत्तियों की शिराओं पर गहरे भूरे रंग के भब्बे बनते हैं।

पूर्ति के साधनः फेरस सल्फेट, आयरन की लेट्स, कार्बनिक खादें।

मैगनीज की कमी

नई पत्तियों की शिराओं के मध्य में हल्के पीले रंग के चकते बन जाते हैं। जो पत्ती के लगभग मध्य भाग में विकसित होते हैं। बाद में धीरे-धीरे पत्ती के निचले भाग की तरफबढ़ते हैं। अधिक कमी होने पर नई पत्तियों पर भूरे रंग के चकते विकसित हो जाते हैं।

पूर्ति के साधनः मैग्नीज सल्फेट, मैग्नीज की लेट्स, कार्बनिक खादें।

- रेखा खर्रा, एमपीयूएटी उदयपुर

प्रदेश भर में हर्षोल्लास से मनाया स्वतंत्रता दिवस

जयपुर। प्रदेशभर में 78वां स्वतंत्रता दिवस हर्षोल्लास और धूमधाम के साथ मनाया गया। जयपुर में आयोजित राज्यस्तरीय समारोह में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने ध्वजारोहण कर मार्च पास्ट की सलामी ली। साथ ही, समारोह में स्कूली छात्र-छात्राओं द्वारा रंगा-रंग सांस्कृतिक कायक्रमों के साथ अनेक मनमोहक और आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि

पिछले आठ माह के अल्प समय में प्रदेश के विकास के लिए कई अहम फैसले लिए गए हैं। उन्होंने हर नागरिक से प्रदेश की विकास यात्रा में सहभागी बनने का आह्वान करते हुए कहा कि हम सभी मिलकर राजस्थान को प्रगति की नई ऊचाईयों पर ले जाने के लिए कार्य करें। उन्होंने कहा कि सौर ऊर्जा के क्षेत्र में राजस्थान में असीम संभावनाएं हैं। इसी क्रम में 'पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना' के अंतर्गत प्रत्येक जिले में 'आदर्श सौर ग्राम' स्थापित किए जाएंगे। ईआरसीपी परियोजना पूर्वी राजस्थान में सिंचाई एवं पेयजल के लिए जीवनरेखा सिद्ध होगी। सरकार द्वारा इस दिशा में तीव्रता से कार्य करते हुए भू-अवाप्ति की कार्यवाही प्रारम्भ कर दी गई है तथा प्रथम चरण के कार्यादेश भी जारी किए जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि सरकार ने 12.01 लाख मीट्रिक टन गेंहू, 3.52 लाख मीट्रिक टन सरसों, 9.92 लाख मीट्रिक टन मूंग और मूंगफली की समर्थन मूल्य पर खरीद की है। साथ ही, किसानों की फसलों को हुए नुकसान की भरपाई के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में 1 हजार 466 करोड रूपये के बीमा क्लेम वितरित किये गये हैं। केन्द्रीय सहकारी बैंकों के माध्यम से किसानों को 17,686 करोड रुपये का ब्याज मुक्त फसली ऋण उपलब्ध करवाया गया है। साथ ही, 1 लाख नये कृषकों को केन्द्रीय सहकारी बैंकों के माध्यम से ब्याज मुक्त फसली ऋण प्रदान किया गया है। उधर, राजभवन में राज्यपाल हरिभाऊ किशनराव बागडे, कृषि मंत्री डॉ. किरोड़ीलाल मीणा ने सवाईमाधोपुर में, सहकारिता मंत्री गौत्तम कुमार दक ने चित्तौड़गढ़ में, पशुपालन-गौपालन मंत्री जोराराम कुमावत ने पाली में, उर्जा मंत्री में हीरालाल नागर ने बूंदी और गोपालन, पशुपालन राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेढम ने डीग जिला मुख्यालय पर आयोजित समारोह में ध्वजारोहण कर मार्चपास्ट की सलामी ली। साथ ही, विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए जिले की प्रतिभाओं को सम्मानित भी किया। इस अवसर पर स्कूली बच्चों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। समारोह में राज्यपाल के सन्देश का पठन भी किया गया। पंत कृषि भवन में कृषि आयुक्त कन्हैयालाल स्वामी ने, राजफैड में प्रबंधन निदेशक नारायण सिंह ने, अपेक्स बैंक में प्रमुख शासन सचिव, सहकारिता शुचि त्यागी ने, सहकार भवन में रजिस्ट्रार अर्चना सिंह ने, पशुपालन निदेशालय में निदेशक डॉ. भवानी सिंह राठौड़ ने , आफरी जोधपुर में निदेशक एमआर बालोच ने, काजरी में डॉ. ओपी यादव ने, राजस्थान पशुपालन विश्वविद्यालय में कुलपति प्रो. मनोज दीक्षित ने, एमपीयूएटी उदयपुर में कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक ने, कृषि विश्वविद्यालय कोटा में कुलपति डॉ. एके व्यास ने, कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर में कुलपति डॉ. अरूण कुमार ने, सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर में डॉ. पीके राय ने, केन्द्रीय भेड और ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकागनर में डॉ. एके तोमर ने ध्वजारोहण कर विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया। इसके अलावा प्रदेश के सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों पर भी 78वां स्वाधीनता दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया।

इनको मिला सम्मान

78वें स्वाधीनता दिवस के मौके पर कृषि सम्बद्ध विभागों में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए कार्मिकों को सम्मानित किया गया। पंत कृषि भवन में आयोजित कार्यक्रम में गंगापुर सिटी के सहायक कृषि अधिकारी पिंटूलाल मीणा को राज्य स्तरीय सम्मान से सम्मानित किया गया। वहीं, गंगापुर सिटी जिला मुख्यालय पर आयोजित समारोह में सहायक कृषि अधिकारी कैलाश चंद्रवाल को जिला कलेक्टर ने, टोंक जिला मुख्यालय पर आयोजित कार्यक्रम में जलदाय मंत्री कन्हैयालाल चौधरी ने कृषि अधिकारी डॉ. मुकेश गैना को प्रशस्ति पत्र प्रदान करके सम्मानित किया। वहीं, कृषि विश्वविद्यालय कोटा में आयोजित समारोह में डॉ. रामराज मीणा, डॉ. महेन्द्र सिंह, डॉ. एके वर्मा और कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर में आयोजित कार्यक्रम में एआरएस मंडोर के प्रभारी डॉ. एमएल मेहरिया और केवीके गुडामालानी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. बीएल मीणा को कुलपति ने प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिन्ह प्रदान करके सम्मानित किया गया। वहीं, भीलवाड़ा जिला मुख्यालय पर आयोजित समारोह में केवीके भीलवाड़ा के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सी.एम. यादव को सम्मानित किया गया।

छोटी जोतधारकों को बनाना होगा खुशहाल- मोदी

78वें स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रासायनिक उर्वरकों के इस्तेमाल से मिट्टी की सेहत में आ रही गिरावट पर भी चिंता जताई। उन्होंने कहा कि सरकार यह सुनिश्चित करने का प्रयास कर रही है कि किसानों को कर्ज, आधुनिक प्रौद्योगिकी, उनके कृषि उत्पादों के लिए मूल्य संवर्धन और विपणन सहायता तक आसान पहुंच मिले। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार किसानों को आधुनिक पद्धतियों के साथ-साथ प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए हरसंभव सहायता प्रदान कर रही है। उन्होंने कहा, हमारी कृषि प्रणाली में परिवर्तन लाना बहुत जरूरी है। सरकार बदलाव के लिए किसानों को मदद मुहैया करा रही है। उन्होंने कहा कि किसानों को अब आसान कर्ज के साथ-साथ प्रौद्योगिकी संबंधी मदद भी मिल रही है। सरकार किसानों के उत्पाद के मूल्यवसंवद्धन के साथ उनकी आय बढौत्तरी पर फोकस कर रही है। उन्होने कहा कि किसानों का जीवन आसान होना चाहिए। किसानों के परिवारों के युवाओं को कौशल प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, क्योंकि छोटी जोत पर गुजारा करना मुश्किल होता जा रहा है।

राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थानः लाभार्थी किसान सम्मेलन में बोले विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह

कीट-रोग, खरतपवार से कृषि में सालाना 40 हजार करोड़ का नुकसान

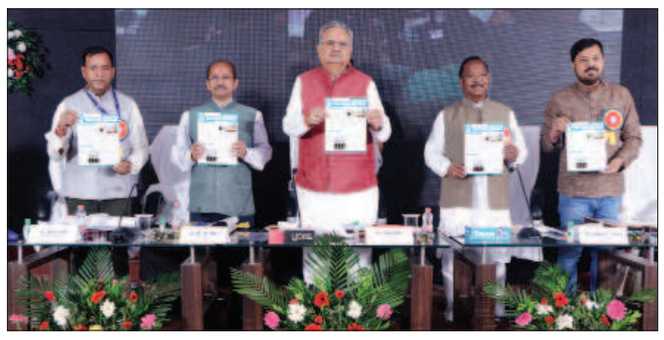

जयपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने लघु-सीमांत किसानों को आर्थिक रूप मजबूती देने की आवश्यकता जताई। उन्होने कहा कि फसल में कीट-रोग और खरतपवार के कारण सालाना 40 हजार करोड़ रूपए का नुकसान देश को उठाना पड़ रहा है। इन कारकों के चलते 30-35 प्रतिशत उपज हर साल खराब हो जाती है। यदि, इस दिशा में वैज्ञानिक ठोस कदम उठाएं तो सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे सन्तु निरामया: का महौल एक दिन देश में जरूर देखने को मिलेगा। डॉ. सिंह जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान में आयोजित लाभार्थी किसान सम्मेलन को मुख्य अतिथी पद से सम्बोधित कर रहे थे। उन्होने कहा कि छोटी जोत में खेती करना काफी काफी मुश्किल हो चला है। लेकिन, किसान अपने और परिवार के जीवनयापन के लिए खेती को कर्म मानकर देश के लिए अन्न उपजा रहा है। सरकार के साथ-साथ समाज को भी ऐसे किसानों की चिंता करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि किसान अपनी उपज का मूल्य संवर्द्धन करके दोगुना से ज्यादा आय प्राप्त कर सकते है। साथ ही, लघु-सीमांत किसान आय बढौत्तरी के लिए पशुपालन, बकरीपालन, मुर्गीपालन, मधुमक्खीपालन सहित दूसरी सहायक गतिविधियों को भी अपनाएं। उन्होंने कहा कि मेरे कार्यकाल में इस संस्थान की नींव रखी गई। अब यह संस्थान आईसीएआर संस्थान में वटवृक्ष का रूप ले चुका है। कई सफलताएं इस संस्थान ने अर्जित की है। कृषि अनुसन्धान और शिक्षा के क्षेत्र में यह संस्थान देश में अग्रिम पंक्ति पर खड़ा है। इससे पूर्व संस्थान के निदेशक और कुलपति डॉ. पीके घोष ने संस्थान के द्वारा अनुसन्धान, शिक्षा और प्रसार के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों और गतिविधियों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, कामधेनु विवि और कृषि विज्ञान केन्द्रों के अधिकारियों ने भाग लिया। उपयोजनाओं के नोडल अधिकारी डॉ ममता चौधरी, डॉ. श्रीधर, डॉ पी मूवेंथान भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान संस्थान परिसर में रुद्राक्ष के पौधे लगाए गए।

देखा पॉवर रीपर का प्रदर्शन

कार्यक्रम के दौरान अतिथियों ने कृषि उपकरण जैसे पॉवर रीपर, डीजल पंप, तेल निष्कासन मशीन, विनोयिंग पंखे और स्प्रयेर का प्रदर्शन देखा। साथ ही, इस कार्य म का आयोजन गोढ ग्राम के किसानों के आदिवासी और अनुसूचित जाति के किसानो को कृषि यंत्रों का वितरण किया। संस्थान के संयुक्त निदेशक डॉ. पंकज शर्मा ने बताया कि इस कार्यक्रम में अनुसूचित जाति उपयोजना के अंतर्गत खरोरा, तिल्दा ओर आरंग तहसील के गोद लिए गए 16 गावों, जनजातीय उप.योजना के गोद ग्राम, फार्मर्स फर्स्ट कार्यक्रम कि अंतर्गत कसडोल-बलोदा बाजार के 300 से ज्यादा आदिवासी किसानों की सहभागिता रही।

लघु धान्य फसलों पर हो रिसर्च

कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के कृषि मंत्री रामविचार नेतामा ने कोदो, कुटकी सहित प्रदेश में पैदा होने वाली लघु धान्य फसलों पर अनुसंधान को मजबूती देने की आवश्यकता जताई। उन्होने कहा कि यह फसलें प्रदेश को नई पहचान देने का मादा रखती है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथी अनुज शर्मा किसानो को संस्थान से जुड़कर संचालित विभिन्न योजनाओं का लाभ उठाने की बात कही।

पुस्तक समीक्षा

कृषि में घोला साहित्य का रस

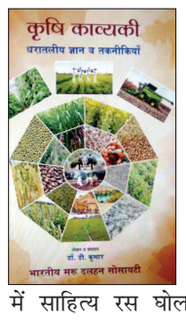

जयपुर। भारतीय मरू दलहन सोसायटी के बैनर तले कृष काव्यकी शीर्षक से प्रकाशित नई पुस्तक में कृषि शस्य क्रियाओं और तकनीकियों में साहित्य रस घोला गया है। इस पुस्तक में प्रेम रस, श्रृंगार ,वीर रस के साथ कृषि रस को भी संकलित किया गया। पुस्तक के लेखक,सम्पादक और प्रकाशक काजरी के पूर्व वैज्ञानिक डॉ. डी कुमार ने बताया कि इस पुस्कत में कृषि क्या है, कृषक कौन, कृषक की वेदना, गाँव, व्रछ, सामान्य फसलें, वाणिज्य फसलें इत्यादी को 8 अध्याओं में विभाजित कर 82 सुंदर कविताएँ के रूप में प्रकाशित किया गया। पुस्तक का आवरण पृष्ट काफी आकर्षक है।

कृषि छात्र रावे के लिए रवाना

कृषि महाविद्यालय डूंगरपुर

डूंगरपुर। कृषि महाविद्यालय डूंगरपुर द्वार चतुर्थ वर्ष के छात्र-छात्राओं को विश्वविद्यालय के कार्य क्षेत्र में आनें वाले कृषि विज्ञान केन्द्र पर ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव के लिये भेजा गया है। इसमें में कृषि विज्ञान केन्द्र, चित्तौड़गढ पर, 16, भीलवाड़ा पर 16, भीलवाड़ा शाहपुरा पर 13 और बॉसवाड़ा पर 12 छात्राओं को भेजा गया है। इस दौरान विद्यार्थी ग्रामीण परिवेश में किसानों के साथ रह कर कृषि कार्यो का प्रायेगिक अनुभव लेगे। साथ ही, महाविद्यालय में किए गये अध्ययन को प्रयोगिक तौर पर किसानों के खेतो पर उतारेंगे। गौरतलब है कि रावे 70 दिन का कार्यक्रम है जो कृषि स्नातक चार वर्षीय व्यवसाय डिग्री का भाग है , जिसको डिग्री के सातवें सेमेस्टर में किया जाता है । कृषि महाविद्यालय डूंगरपुर ये कार्य प्रथम बार कराया जा रहा है।

देश में कृषि-डीएसएस की शुरूआत

नई दिल्ली। सरकार ने फसल प्रबंधन और पैदावार बढ़ाने में मददगार महत्वपूर्ण डेटा किसानों को उपलब्ध कराने के लिए उपग्रह आधारित कृषि निर्णय सहायता प्रणाली शुरू की। कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कृषि-निर्णय सहायता प्रणाली (कृषि-डीएसएस) की शुरुआत की, जो एक भू-स्थानिक मंच है। यह फसल की स्थिति, मौसम प्रणालियों, जल संसाधनों और मृदा की स्थिति संबंधी जानकारी प्रदान करेगा। चौधरी ने इस कार्यक्रम में कहा, जलवायु संबंधी बढ़ती चुनौतियों के बीच यह मंच किसानों के लिए मील का पत्थर है। कृषि सचिव देवेश चतुर्वेदी ने कृषि में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के लाभों पर जोर दिया और फसलों की अधिक से अधिक किस्मों में दूर संवेदी सुविधा के उपयोग को बढ़ावा देने का आग्रह किया। अधिकारियों ने बताया कि कृषि-डीएसएस मंच को अंतरिक्ष विभाग के आईआरएनएसएस-1ए और वेदास का उपयोग करके विकसित किया गया है।

क्या है कृषि डीएसएस

कृषि-डीएसएस को सरकार की गति शक्ति पहल के समान प्रौद्योगिकी का उपयोग करके विकसित किया गया है। कृषि-डीएसएस उपग्रह से प्राप्त तस्वीरों का इस्तेमाल कर कीटों के हमलों और मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों जैसी संभावित आपदाओं के बारे में पूर्व चेतावनी जारी करेगी। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अंतरिक्ष उपयोग केंद्र के निदेशक नीलेश एम देसाई ने कहा कि कृषि क्षेत्र में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों का प्रयोग 1969 से किया जा रहा है । उन्होंने धान और गेहूं से परे भी इनके प्रयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया।

प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम

कृषि रसायनों से खेतों की मिट्टी हुई जहरीली

बूंदी। कृषि विज्ञान केन्द्र पर प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम उद्योगिनी संस्था के सहयोग से सम्पन्न हुआ, जिसमें बून्दी जिले की 36 किसानो ने भाग लिया। कार्यक्रम में केन्द्र के प्रभारी डॉ. हरीश वर्मा ने कहा कि कृषि रसायनों के अंधाधुंध उपयोग से खेतों की मिट्टी जहरीली हो गई है, जिसका दुष्प्रभाव मनुष्यों के साथ-साथ पशु-पक्षियों पर दिखने लगा है। मनुष्यों में कम उम्र में उच्च रक्तचाप, निम्न रक्तचाप, मधूमेह, कैंसर और हृदयाघात तथा पशुओं में बांझपन एवं बच्चेदानी बाहर निकलना, गर्भ न ठहरना इत्यादि बहुत अधिक होने लगा है। इन सबसे बचने का उपाय प्राकृतिक खेती है। डॉ. वर्मा ने उड़द और सोयाबीन में रसचूसक कीट प्रबन्धन के लिए नीले - पीले रंग के चिपचिपे ट्रेप लगाने की सलाह दी। नोडल अधिकारी प्राकृतिक खेती डॉ. घनश्याम मीणा ने प्राकृतिक और जैविक खेती में अन्तर बताया। साथ ही, प्राकृतिक खेती के लिए जीवामृत, घनजीवामृत बनाना, फूल पानी, गुड़जल अमृत पानी बनाना और हरी खाद के उपयोग के तरीकों के बारे में बताया। पौध संरक्षण के लिए दशपर्णी अर्क बनाना, अग्नि अस्त्र बनाना, सोंठास्त्र बनाना, नीमास्त्र बनाना और रोग नियंत्रण के लिए कण्डे पानी का उपयोग एवं खट्टी छाछ की उपयोगिता के बारे में जानकारी दी।

जयपुर सेंट्रल को-ऑपरेटिव बैंक वार्षिक बैठक

ग्रामीण बैंकिग सेवा का होगा विस्तार

जयपुर। ग्रामीण क्षेत्र में नवीनतम प्रौद्योगिकी के उपयोग को अधिकाधिक बढाते हुये बैंकिंग सेवाओं का विस्तार किया जायेगा। ताकि, सरकार की योजनाओं के माध्यम से किसानों की आय एवं जीवन स्तर में सुधार हो सके। जिला कलक्टर, और जयपुर सेंट्रल को-ऑपरेटिव बैंक के प्रशासक प्रकाश राजपुरोहित ने यह बात बैंक की साधारण वार्षिक बैठक में कही। उन्होंने कहा कि दिन प्रति दिन कृषि और व्यवसाय क्षेत्र में हो रहे बदलाव को देखते हुये बैंकिंग क्षेत्र में बैंक द्वारा विभिन्न जमा एवं ऋण योजनाओं व सेवाओं की शुरूआत की जा रही है।

बैंक प्रदेश में रहा प्रथम

बैंक के प्रबंध संचालक मदन लाल गुर्जर ने बताया कि गत वर्ष बैंक द्वारा 2 लाख 63 हजार से अधिक किसानों को रिकार्ड 1568 करोड रुपये का अल्पकालीन कृषि ऋण का वितरण किया जो कि पूरे प्रदेश में सर्वाधिक है। गुर्जर ने बताया कि इस वर्ष बैंक द्वारा 21795 नये सदस्यों को अल्पकालीन ब्याज मुक्त फसली ऋण वितरण के दायरे में लाया गया है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष 2000 करोड रुपये के ऋण वितरण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

एक करोड का लाभांश

उन्होंने बताया कि बैंक को वर्ष 2023-24 में 2565.64 लाख रुपये का परिचालन लाभ और 1001.11 लाख रुपये का रिकार्ड शुद्ध लाभ हुआ है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 250 लाख रुपये अधिक है। प्रबंध संचालक ने बताया कि इस वर्ष बैंक की साधारण सभा द्वारा 1 करो? रुपये लाभांश वितरण करने का निर्णय किया है। बैंक की वार्षिक साधारण सभा ने वर्ष 2024-25 के लिये 181.91 करोड़ रुपये का बजट पारित किया।

डिप्लोमा पाठ्यक्रम का दीक्षान्त समारोह

उच्च स्तरीय शिक्षा कृषि क्षेत्र को देगी मजबूती

चूरू। जिला मुख्यालय पर कृषि उपज मंडी स्थित आत्मा परियोजना सभागार में आदान विक्रेताओं के लिए कृषि विस्तार सेवाओं में डिप्लोमा पाठ्यक्रम का दीक्षान्त समारोह आयोजित किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि चूरू विधायक हरलाल सहारण ने कहा कि कृषि विषय में उच्च स्तरीय शिक्षा कृषि क्षेत्र को मजबूती देगी। कृषि विस्तार सेवाओं में डिप्लोमा की दीक्षा लेने वाले किसान कल्याण का कार्य करें। सरकार ने चूरू में कृषि कॉलेज खोले जाने की घोषणा की है। इससे जिले के किसान परिवार के विद्यार्थियों को उन्नत शिक्षा मिलेगी और कृषि की उन्नत तकनीकी का ज्ञान होने से कृषि क्षेत्र को संबल मिलेगा। चुरू प्रधान दीपचन्द राहड ने कृषि को भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ बताया। आत्मा परियोजना निदेशक दीपक कपिला ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि डिप्लोमा प्राप्त करने वाले अभ्यर्थियों में मुकेश सहारण ने स्वर्ण पदक, प्रदीप यादव ने रजत पदक और हेमराज बांगडवा को कांस्य पदक हासिल किया। साथ ही विशेष योग्यता प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थी सुनिता, अनु, उत्तमसिंह, सुरेन्द्र सिहाग और धर्मवीर वालिया को विशेष योग्यता प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। अतिथियों ने प्रशिक्षणार्थियों का सम्मान किया।

सरकार ने एआई शुल्क में की बढ़ौत्तरी

पशु नस्ल सुधार हुआ महंगा

जयपुर। खाद्य वस्तुओं तक सीमित रहने वाली महंगाई की मार से अब मूक पशुधन भी अछूता नहीं रहा है। पहले ही पशु अस्पतालों के द्वारा दी जाने वाली दवा पर्ची पशुपालकों की जेब ढीली कर रही थी। अब पशु नस्ल सुधार का कार्य भी महंगा हो गया है। सरकार ने कृत्रिम गर्भाधान शुल्क में बढौत्तरी को मंजूरी दी है। जिससे पशुपालकों पर आर्थिक भार पड़ना तय है। गौरतलब है कि पहले पशुपालको से एआई के लिए 30 रूपए का शुल्क लिया जाता था। जिसे बढ़ाकर सरकार ने 50 रूपए कर दिया है। एआई की नई दरे 16 अगस्त से प्रदेशभर में लागू हो गई है। विशेषज्ञो का कहना है कि पशु नस्ल सुधार के लिए सरकार को एआई शुल्क को माफ करना चाहिए था। लेकिन, सरकार ने पशुपालकों पर वित्तीय भार बढ़ाने का काम किया है। इससे एआई के लक्ष्यों पर विपरीत प्रभाव पड़ने का डर है।

यह है स्थिति

प्रदेश के कई पशु अस्पताल खुद बीमार हैं। पशुओं का इलाज कराने आए लोगों को जेब में पैसे लेकर आना पडता है। इसका कारण है कि उन्हें दवा के बदले दवा की पर्ची थमाई जाती है। लोगों को बाजार से दवा खरीदनी पडती है, जिसमें पशुपालकों की जेब ढीली हो रही है। यह हाल एक-दो दिनों से नहीं, बल्कि कई महीने से है।

झोलाछापों पर कार्यवाही नहीं

पशु अस्पतालों में अधिकांश पद रिक्त चल रहे है। इस कारण राजधानी जयपुर सहित प्रदेश के दूसरे जिलों में पशु झोलाछाप डॉक्टर की संख्या बढ़ती जा रही है। इस ओर पशुपालन विभाग कभी-कभार ही ध्यान देता है। झोलाझाप पशु के स्वास्थ्य से खिलवाड़ तो कर ही रहे है। साथ ही, पशुपालकों को आर्थिक नुकसान भी पहुंचा रहे है।

लहसुन अब मसाले की श्रेणी में!

अदालत का फैसला

जयपुर। पहले लहसुन सब्जी की श्रेणी में था। लेकिन इसे मसाले के वर्ग में शामिल करने के लिए लंबी कानूनी लड़ाई लड़ी गई। आखिरकार अब लहसुन मसाले की श्रेणी में शामिल होने का रास्ता साफ हो गया है। कोर्ट ने लहसुन मसाला है या सब्जी? मध्य प्रदेश की अदालत ने सालों से चली आ रही बहस को खत्म किया। लहसुन को मसाला माना जाए या सब्जी, इस पर कई सालों से कानूनी विवाद चल रहा था, जिस पर किसानों की कड़ी नजर थी। जानिए हाईकोर्ट के फैसले में क्या कहा गया।

लहसुन सब्जी है या मसाला?

मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की इंदौर पीठ ने वर्षों से चली आ रही बहस को आखिरकार खत्म कर दिया है और लहसुन को सब्जी घोषित कर दिया है, साथ ही सब्जी और मसाला दोनों बाजारों में इसकी बिक्री की अनुमति दे दी है। उच्च न्यायालय के फैसले से किसानों और व्यापारियों को लाभ मिलने की उम्मीद है, क्योंकि इससे लहसुन को सब्जी माना जाएगा, जबकि इसे अभी भी मसाले की श्रेणी में रखा जाएगा। अपने शक्ति शाली स्वाद के लिए जाना जाने वाला लहसुन, अपने तीखे स्वाद और विभिन्न व्यंजनों में इसके बहुमुखी उपयोग के कारण अक्सर खाना पकाने में मसाला माना जाता है।

यह था विवाद

यह विवाद 2015 में शुरू हुआ था जब मध्य प्रदेश के एक किसान संगठन ने मंडी बोर्ड को लहसुन को सब्जी की श्रेणी में रखने के लिए राजी किया था। हालांकि, कृषि विभाग ने तुरंत इस फैसले को पलट दिया और लहसुन को कृषि उपज मंडी समिति अधिनियम 1972 के तहत मसाले की श्रेणी में रख दिया। जवाब में, आलू, प्याज और लहसुन कमीशन एजेंट एसोसिएशन ने 2016 में इंदौर बेंच का दरवाजा खटखटाया और प्रमुख सचिव के फैसले को चुनौती दी। फरवरी 2017 में एकल न्यायाधीश ने एसोसिएशन के पक्ष में फैसला सुनाया, जिससे व्यापारियों के बीच विवाद पैदा हो गया, जिन्होंने तर्क दिया कि इस फैसले से किसानों के बजाय कमीशन एजेंटों को मुख्य रूप से फायदा हुआ है। जुलाई 2017 में याचिकाकर्ता मुकेश सोमानी ने एक समीक्षा याचिका दायर की, जिसके बाद न्यायमूर्ति एस.ए. धर्माधिकारी और न्यायमूर्ति डी. वेंकटरमन की इंदौर पीठ ने हाल ही में यह फैसला सुनाया।पीठ ने 2017 के फैसले को बरकरार रखा, जिसमें लहसुन की बिक्री की पिछली प्रणाली को बहाल किया गया, जो किसानों को एजेंटों को कोई कमीशन दिए बिना सीधे बाजार में अपनी उपज बेचने की अनुमति देता है।अदालत ने यह भी कहा कि लहसुन को मसाले के रूप में वर्गीकृत किया गया है, लेकिन इसमें बदलाव करने का मामला राज्य सरकार के अधिकार क्षेत्र से बाहर है। अदालत ने कहा, 'इसलिए, इस समय इसके वर्गीकरण के बारे में कोई और निर्णय नहीं लिया जा सकता, सिवाय इसके कि इसे सब्जी के रूप में ही रखा जाएगा।'

पशु चिकित्सकों की नियुक्ति पर रोक

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने पशु चिकित्सकों की नियुक्ति देने रोक लगाई है। न्यायालय ने यह आदेश जगदीश गुर्जन मूंडिया और अन्य की याचिकाओं पर दिए। गौरतलब है कि राजस्थान लोक सेवा आयोग के द्वारा 900 पदों पर निकाली गई भर्ती का परिणाम हाल ही में जारी किया था। इसके बाद पशुपालन विभाग ने 22 अगस्त से पशु चिकित्सकों को नियुक्ति देने की तैयारियां शुरू कर दी थी। यह आदेश न्यायाधीश महेन्द्र कुमार गोयल की एकलपीठ ने दिए।

पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित

अजमेर। कृषि विभाग चौरसियावास रोड में फील्ड स्टाफ की मासिक प्रशिक्षण बैठक का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण के उपरान्त विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों के द्वारा कार्यालय परिसर में पौधा रोपण का कार्य किया गया। इस दौरान अमलतास, गुलमोहर, नीम, जामुन, बीलपत्र, एवम् नीली गुलमोहर के कुल 20 पौधे लगाये गए।

एंटिरेगिंग कार्यक्रम का आयोजन

डूंगरपुर। कृषि महाविद्यालय डूंगरपुर पर एंटि रेगिंग कायक्रम का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. आरपी मीना ने एंटि रेगिंग के सम्बन्ध में विद्यार्थियों को जानकारी दी। कार्यक्रम के दौरान यूजीसी द्वारा निर्देशित एंटिरेगिंग से सम्बन्धित विडियो भी प्रसारित किया गया।

पर्यावरण के लिए पौधारोपण जरूरी

बाड़मेर। कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर और बीएलएमसीएल की एकीकृत ग्रामीण आजीविका परियोजना के तहत् राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय ग्राम पंचायत जालीपा में पौधारोपण कायक्रम आयोजित किया गया। कार्य म का शुभारंभ विद्यालय की प्रधानाध्यापिका सरोज देवी ने पौधारोपण कर किया गया। कार्यक्रम में कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के मनप्रीत सिंह ने बताया कि जिस प्रकार शरीर को पोषण के लिए भोजन की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए पेड-पौधों की आवश्यकता होती है। पेड-पौधे पर्यावरण की अशुद्धियों को सोख लेते हैं और हमें शुद्ध प्राणदायिनी वायु देते हैं। इसकी निरंतरता बनाए रखने के लिए हमें अधिक से अधिक पेड-पौधे लगाने चाहिए।

नैनो यूरिया-नैनो डीएपी का करें उपयोग

जयपुर। प्रमुख शासन सचिव कृषि वैभव गालरिया की अध्यक्षता में पंत कृषि भवन के समिति कक्ष में उर्वरकों की मांग, आपूर्ति और उपलब्धता की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें उर्वरकों और संभावित आपूर्ति के संबंध में कंपनीवार समीक्षा की गई। बैठक में उर्वरक निर्माता एवं आपूर्तिकर्ता ?र्मों के प्रतिनिधियों द्वारा भाग लिया गया। बैठक में गालरिया ने बताया कि डीएपी, यूरिया, एमपीके, एसएसपी उर्वरकों का मासिक आवंटन जो केंद्र सरकार द्वारा किया जाता है उसकी शत् प्रतिशत आपूर्ति होना सुनिश्चित किया जाए। प्रमुख शासन सचिव ने नैनो यूरिया और नैनो डीएपी को कृषकों द्वारा ज्यादा प्रयोग में लेने के लिए विभाग द्वारा इनका प्रचार प्रसार करने के लिए भी कहा। साथ ही उर्वरकों की हो रही कालाबाजारी की रोकथाम और कालाबाजारी करने वाले आदान वि ेताओं पर कार्यवाही की जाए।

रावे विद्यार्थियों को कुलपति ने दिखाई हरी झंडी

उदयपुर। राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर के बी.एस.सी. (कृषि) चतुर्थ वर्ष के विद्यार्थियों को ग्रामीण कृषि कार्यानुभव कार्यक्रम के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक और महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. आरबी दुबे ने हरी झण्डी दिखाकर बसों को रवाना किया। रावे कार्य म के प्रभारी डॉ. आरएस. राठौड ने बताया कि इस सत्र के 102 विद्यार्थियों में से 34 छात्राऐं और 68 छात्र हैं जो कि बॉसवाडा, डूँगरपुर, प्रतापगढ, चित्तौडगढ, भीलवाडा, शाहपुरा, राजसमन्द और वल्लभनगर कृषि विज्ञान केन्द्रों पर भेजे गए हैं ।

किसान चौपाल का आयोजन

बाड़मेर। कृषि विज्ञान केंद्र गुड़ामालानी द्वारा नई उंदरी गांव में किसान चौपाल का आयोजन किया गया ।चौपाल कार्य म में केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ बीएल मीणा ने किसानों को खरीफ फसलों में खरपतवार प्रबंधन के बारे में जानकारी दी। वहीं, डॉ. बाबूलाल जाट ने खरीफ फसलों में समन्वित कीट प्रबंधन के बारे में बताया।

आचार्य दीक्षित ने राजुवास के कुलपति

बीकानेर। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति पद का अतिरिक्त कार्यभार आचार्य मनोज दीक्षित ने को ग्रहण किया। माननीय राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागडे ने राज्य सरकार की सलाह पर आदेश जारी कर महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित को अग्रिम आदेशों अथवा नियमित कुलपति की नियुक्ति होने तक, जो भी पहले हो, व्यवस्था के अंतर्गत अतिरिक्त प्रभार के रूप में राजुवास कुलपति के कार्यो का निर्वहन करने के आदेश जारी किये।

राष्ट्रीय कीट निगरानी प्रणाली का केवीके पर प्रसारण

जैसलमेर। कृषि विज्ञान केन्द्र पोकरण द्वारा राष्ट्रीय कीट निगरानी प्रणाली का टेलीकास्ट किया गया । जिसमे गोमट, पोकरण ग्रामीण, दुधिया ग्रामों के 36 कृषकों ने प्रतिभाग किया । केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. दशरथ प्रसाद ने बताया कि कीट नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कीट निगरानी सिस्टम लॉन्च, फोटो से पता चलेगा फसल में कौन सा कीट है और क्या दवा लगेगी।

एआरएस कोटा पर किया पौधरोपण

कोटा। 78वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर कृषि अनुसंधान केन्द्र, उम्मेदगंज, कोटा में पौधरोपण कायक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय निदेशक अनुसंधान डॉ. बीएस मीणा ने बताया कि अभियान के तहत बोगनवेलिया स्पीसीज और अर्जुन के 220 पौधें लगाये। अभियान के प्रभारी डॉ. रामराज मीणा ने लगाये गये पौधों की देखरेख की जानकारी दी।

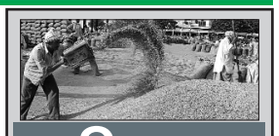

कृषि जिंस भाव

बारां

गेंहू	2680-2410
सरसों	5771-5300
उड़द	8015-6740
सोयाबीन	4241-3700
मक्का	2500-2500
चना	7100-6301
मूंग	7280-6400

भरतपुर

जौ	2600-2850
तिल	11500-12000
गेहूं	2300-2650
बाजरा	1900-2100
मक्का	2100-3200
मूंग	6100-7500

प्रतापगढ़

मक्का	1800-2700
गेहू	2150-2550
अलसी	4500-5660
सरसों	4600-5270
सोयाबीन	4100-4326
मसूर	5300-7017

श्रीगंगानगर

सरसों	4625-5352
गेहूं	2426-2530
चना	7105-7400
ग्वार	4365-4840
मूंग	7265-7300

सूरतगढ़

ग्वार	4878-4951
सरसों	5181-5327
गेहूं	2400-2500

अनूपगढ़

ग्वार	4980-4675
सरसों	5597-5351
मूंग	6800-6875
गेहूं	2460-2456

नोहर

मूँग	6501-7600
सरसों	5350-5475
मोठ	6200-6300
अरंडी	5401-5951
चना	7565-7673
गेहूं	2410-2558
जौ	2000-2166

पीलीबंगा

सरसों	5146-5360
जौ	1600-1700
गेहूं	2470-2506

गोदित गांव बालरवा के विकास को मिलेगी मजबूती

जोधपुर। पहले किसान खुद चलकर कृषि विश्वविद्यालय जाते थे, और खेती बाड़ी की जानकारी हासिल करते थे । लेकिन अब कृषि वैज्ञानिक खुद चलकर उनके गांव आएंगे और उन्नत कृषि व फसल उत्पादन बढ़ाने संबंधित जानकारी सरल शब्दों में बताएंगे। ये विचार अतिरिक्त जिला कलेक्टर प्रहलाद नागा ने व्यक्त किए।

प्रहलाद नागा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से हाल ही में गोद लिए गए गांव बालरवा में आयोजित महिला उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम, पशु चिकित्सा शिविर और वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम के मौके पर बतौर मुख्य अतिथि ग्रामीणों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यह सौभाग्य पूर्ण है कि विश्वविद्यालय की ओर से गांव को गोद लिया गया है अब गांव के विकास में तेजी से बढ़ोतरी होगी। कार्यक्रम में अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण व्यास ने कहा कि विश्वविद्यालय, जोधपुर जिला प्रशासन व सरपंच के सहयोग से पुरजोर कोशिश करेगा कि गांव का सर्वांगीण विकास हो। उन्होंने कहा कि केवल कागजी कार्यवाही ना करके हमारे कृषि वैज्ञानिक प्रत्येक 15 दिन में गांव जाकर किसानों से मिलेंगे और उनकी कृषि एवं पशुपालन से जुड़ी हर समस्या का निदान करेंगे।

गेहूं के भाव बढ़ने से रोटी हुई महंगी

जयपुर। उत्तर भारत में प्रमुख रूप से खाया जाने वाले गेहूं के भाव लगातार बढ़ते जा रहे है। गेंहू के भाव बढ़ने से आटा भी महंगा हो गया है। इससे आमजन के लिए रोटी महंगी हो गई है। दरअसल, केन्द्र सरकार ने गेहूं और आटे की बढ़ती कीमतों पर अंकुश लगाने के लिए आटा मिलर्स को गेहूं बेचने का निर्णय किया था।केन्द्र सरकार ने भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) को अपने भंडार से 23250 रुपए प्रति टन पर गेहूं बेचने की मंजूरी दी, लेकिन करीब एक माह बाद भी सरकार की ओर से गेहूं की बिक्री शुरू नहीं हो पाई है, अभी तो इसके लिए टेंडर भी नहीं निकले है। इससे गेहूं और परिणामस्वरूप आटे के दामों में बढ़ोतरी होना शुरू हो गई है। अनाज व्यापारियों के अनुसार सरकार ने जल्द ही ओपन मार्केट में गेहूं की बिक्री शुरू नहीं की तो घरेलू बाजार में गेहूं की बढ़ती कीमत को थामना मुश्किल हो जाएगा और महंगाई और ज्यादा बढ़ जाएगी।

गेहूं के भाव रुपए प्रति क्विंटल में

क्वालिटी	2 माह पहले	वर्तमान होलसेल भाव
अच्छी या उच्च-	3150-3200	3350-3400
मध्यम	2850-2900	3050-3100
निम्न	2600-2650	2800-2850

जोधपुर में कोटा-बारां से सप्लाई

जोधपुर में गेहूं की अधिकांश सप्लाई कोटा, एमपी बॉर्डर क्षेत्र, बारां, बूंदी आदि से होती है। राजस्थान में गेहूं का प्रमुख उत्पादक क्षेत्र श्रीगंगानगर है।

आटा भी हुआ महंगा (होलसेल भाव)

- 26 किलो आटा की थैली पहले 750 रुपए, अब 820 रुपए यानि 31 रुपए प्रति किलो।
- 10 किलो आटा की थैली पहले 325 रुपए, अब 340 रुपए।
- ग्राहक को दस किलो आटा खरीदने पर 15 रुपए व 26 किलो पर 70 रुपए ज्यादा देने पड़ रहे।
- सरकार ने जल्द ही गेहूं बेचान प्रक्रिया शुरू नहीं की तो, आने वाले दिनों में भाव और बढ़ जाएंगे।

8 अक्टूबर से आयोजित होगा जसवंत पशु मेला

भरतपुर। जिला कलक्टर डॉ. अमित यादव ने जसवंत प्रदर्शनी मेला के सम्बंध में की जा रही तैयारियों की समीक्षा बैठक कर सम्बंधित अधिकारियों को दिये गये दायित्वों का समय पर निर्वहन करने के निर्देश दिए। जिला कलक्टर ने कहा कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री जसवंत प्रदर्शनी एवं पशु मेला का आयोजन 8 से 16 अक्टूबर तक निर्धारित कार्यक्रमानुसार आयोजित किया जायेगा। बैठक में पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक खुशीराम मीना ने बताया कि 8 अक्टूबर को मेला और प्रदर्शनी का उद्घाटन किया जायेगा, 8 एवं 9 अक्टूबर को पशु प्रतियोगिता, 9 अक्टूबर को भजन जिकडी, 10 अक्टूबर को नौटंकी, 11 अक्टूबर को ढोला गायन, 11 और13 अक्टूबर को कुश्ती दंगल, 12 अक्टूबर को रावण दहन, 13 अक्टूबर को सांस्कृतिक संध्या, 14 अक्टूबर को बाजार प्रतियोगिता, 15 अक्टूबर को क्षेत्रीय कवि सम्मेलन, 16 अक्टूबर को अखिल भारतीय कवि सम्मेलन एवं सांय 3.30 बजे से पारितोषिक वितरण एवं समापन कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। उन्होंने बताया कि 23 सितम्बर को पशुमेला चौकी लगाकर पैनल्टी रवन्ना लिया जाना प्रस्तावित है।

बरसात के मौसम में पशुओं की देखभाल

अगर पशुओं की अच्छी तरह देखभाल हो तो ज्यादातर रोगों से बचा जा सकता है। लेकिन, पशुओं की सही देखभाल के लिए बारिश के मौसम में पशुओं में होने वाले रोग, रोगों के उपचार और उसके कारण को समझना जरूरी है। हालांकि कुछ संक्रामक रोगों के लिए पशुओं का टीकाकरण कराया जा सकता है। अगर किसान इन बातों का ध्यान रखते हैं तो पशुओं के दूध उत्पादन की क्षमता प्रभावित नहीं होगी। लेकिन अच्छे खाने पीने और देखभाल के साथ बारिश के मौसम में होने वाले बीमारियों के लिए जरूरी रोकथाम किया जाना चाहिए।

साफ-सफाई

बारिश के मौसम में पशुओं को कई तरह की बीमारियां होती है। बरसात के मौसम में शेड में पानी नहीं भरना चाहिए और बाड़े की नालियाँ साफसुथरी रहनी चाहिए। बाड़े की सतह सुखी और फिसलन वाली नहीं होनी चाहिए। लगातार गीले होने के कारण पशुओं के खुरों में संक्रमण होने की संभावना अधिक रहती है, इसलिए सप्ताह में एक या दो बार हल्के लाल दवाई के घोल से पशुओं के खुरों को साफ करना चाहिए।इसलिए बरसात के मौसम में पशुओं के रखरखाव पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती हैं।

पशुओं को आहार

हर मौसम में पशुओं के लिए विशेष आहार होता है। ताकि , मौसमी परिस्थितियों के अनुसार मवेशियों का शरीर सही तरीके से सामंजस्य स्थापित कर सकें। पशु बेजुबान होते हैं, उन्हें किसान जैसा चारा दे दें वो खा लेते हैं। लेकिन, काफी ज्यादा किसान बारिश के मौसम में ज्यादा घास दे देते हैं। इस समय घास की पैदावार भी ज्यादा होती है। इस बात का हमेशा ध्यान रखें कि बारिश के मौसम में ज्यादा घास या गीला चारा देना पशुओं के पाचन के लिए सही नहीं होता। इससे पशुओं में दस्त लगने की शिकायत हो जाती है। जब पशु दस्त की समस्या से ग्रस्त हो जाते हैं तो शारीरिक रूप से कमजोर होते हैं। दुधारू पशुओं के पालन में इस बात का ज्यादा ध्यान रखें। दुधारू पशुओं के साथ ऐसी समस्या होने पर किसानों को काफी ज्यादा नुकसान हो जाता है। इसलिए पशुओं को गीला चारा यानी घास के साथ कम से कम 40 प्रतिशत तक सूखा चारा जरूर दें। इससे आहार में संतुलन रहेगा। बारिश के मौसम में पशुओं को देने वाले आहार के मामले में इन दो प्वाइंट का जरूर ध्यान रखें:-

1 पहला तो यह है कि पशुओं को 60 प्रतिशत घास के साथ कम से कम 40 प्रतिशत तक सूखा चारा दें।

2 पशुओं को उतना चारा ही दें जितना वह खाते हैं। सुबह और शाम का चारा एक साथ न लगाएं। कई बार किसान यह भी सोचते हैं कि दोनों समय का चारा एक साथ लगा लेते हैं, इससे समय की बचत होगी और शाम को आसानी से पशुओं को चारा दिया जा सकता है। लेकिन, ऐसा नहीं है, सूखे चारे में गीलापन आ जाने से उसमें फफूंद की समस्या हो जाती है। फफूंद पशुओं में बदहजमी का कारण बनती है। इसलिए दुधारू पशुओं के लिए इस बात का खास ध्यान रखें। ताकि, उसे बदहजमी अथवा दस्त की शिकायत न हो। ताकि पशु कमजोर न हो और पशुओं के दूध उत्पादन के क्षमता में भी कमी न हो।

बारिश के सामान्य रोग

एंथ्रेक्स - यह सभी गर्म रक्त वाले पशु विशेष रूप से मवेशी, भैंस, भेड़, बकरी में होने वाला एक तीव्र, व्यापक, संक्रामक रोग है। यह रोग मिट्टी से पैदा होने वाला संक्रमण है। यह आमतौर पर बड़े जलवायु परिवर्तन के बाद होता है। यह बीमारी ज्यादातर पशुओं के दूषित चारा खाने से और दूषित पानी पीने से होती है। यह इनहेलेशन और बिलिंग मक्खियों द्वारा भी फैलती है।

लक्षण - अचानक शरीर का तापमान का बढ़ जाना भूख ना लगना. शारीरिक कमजोरी महसूस होना सांस लेने में तकलीफहोना एवं हृदय की गति की रफ्तार बढ़ जाना। गुदा, नासिका, योनी आदि जैसे प्राकृतिक छिद्रों से खून का बहाव होना आदि।

नियंत्रण - सबसे पहले संक्रमित जानवरों को स्वस्थ जानवरों से अलग कर दे। संक्रमित क्षेत्र से स्वच्छ क्षेत्र में पशुओं की आवाजाही बंद कर दे। 10: कास्टिक सोडा या फॉर्मेलिन का इस्तेमाल करके

पशुओं के रहने की जगह को पूरी तरह से कीटाणुरहित करें।

2.खुर- मुख संबंधी बीमारियां- खुर-मुख संबंधी बीमारियां बरसात के मौसम में इस तरह की बीमारियां पशुओं में आम पायी जाती है। इसमें पैर और मुख की बीमारी (एफएमडी) मवेशी, गाय, भैंस, भेंड़, बकरी, सूअर आदि पालतू पशुओं और हिरन आदि जंगली पशुओं को होती है। यह बीमारी भारत के कई हिस्सों में वास करने वाले पशुओं को मुख्यतः होती है।

प्रबंधन - इस बीमारी को रोकने के लिए प्रभावित जानवरों को दूसरे जानवरों के संपर्क में नहीं आने देना चाहिए। पशुओं की खरीद बीमारी से प्रभाबित क्षेत्रों से नहीं होनी चाहिए। जब भी नए पशु की खरीदी करें तो उनको खरीदी के 21 दिनों तक अकेला रखना चाहिए।

उपचार- बीमार पशु के रोग से प्रभावित अंग को जैसे उनके मुख-पैर को 1 प्रतिशत पोटैशियम परमैगनेट के घोल से धोना चाहिए। उनके मुख में बोरिक एसिड ग्लिसरीन का पेस्ट लगाना चाहिए। साथ ही, जानवरों को 6 महीने के अंतराल से एफएमडी के टीके लगवाने चाहिए।

ब्लैक क्वार्टर - यह पशुओं में होने वाला एक तीव्र संक्रामक और अत्यधिक घातक, जीवाणु रोग है। भैंस, भेड़ और बकरी भी इस बीमारी से प्रभावित होते हैं। इस बीमारी से अत्याधिक प्रभावित 6-24 उम्र के युवा पशु होते है। यह बीमारी आमतौर पर बारिश के मौसम में होती हैं।

लक्षण - बुखार भूख की कमी शारीरिक कमजोरी नाड़ी और हृदय गति का तेज हो जाना सांस लेने में परेशानी होना।

उपचार - यदि रोग की प्रारंभिक अवस्था में इसको नियंत्रित किया जाये तो इसका उपचार प्रभावी होता है। उपचार और रोकथाम के लिए विभाग के नजदीकी पशुपालन अधिकारी या पशुपालन केंद्र में संपर्क करें।

4.गलाघोंटू : इस रोग में पशु को अचानक तेज बुखार हो जाता है और पशु कांपने लगता है। रोगी पशु सुस्त हो जाता है और खाना-पीना कम कर देता है। पशु की आंखें लाल हो जाती हैं। पीड़ित पशु के मुंह से ढेर सारा लार निकलता है। गर्दन में सूजन के कारण सांस लेने के दौरान घर्र-घर्र की आवाज आती है और अंततः 12-24 घंटे में मौत हो जाती है। पशु के पेट में दर्द होता है, वह जमीन पर गिर जाता है और उसके मुंह से लार भी गिरने लगती है। लक्षण के साथ ही इलाज न शुरू होने पर एक-दो दिन में पशु मर जाता है। इसमें मौत की दर 80 फीसदी से अधिक है। शुरुआत तेज बुखार (105-107 डिग्री) से होती है। रोग से मरे पशु को

रोकथामः- प्रति वर्ष वर्षा ऋतु से पूर्व इस रोग का टीका पशुओं को अवश्य लगवा लेना चाहिए। बीमार पशु को दूसरे स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए। जिस स्थान पर पशु मरा हो उसे कीटाणुनाशक दवाइयों, फिनाइल या चूने के घोल से धोना चाहिये। पशु आवास को स्वच्छ रखें और रोग की संभावना होने पर तुरन्त पशु चिकित्सक से सम्पर्क कर सलाह लेवें।

- गीतम सिंह, लक्ष्मी कांत शर्मा, माधव विश्वविद्यालय, सिरोही

घर बैठे हलधर टाइम्स मंगाने के लिए भर कर भेजें।

सदस्यता फार्म

दिनांक .....

हलधर टाइम्स साप्ताहिक ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि पशुपालन, सहकारिता, ग्रामीण विकास, मशीनरी व संचार से जुड़ी आधुनिकतम एवं तकनीकी जानकारी किसानों व ग्रामीणों तक पहुंचाकर ग्रामीण विकास को प्रोत्साहित कर रहा है। हलधर टाइम्स समय-समय पर भिन्न-भिन्न विषयों पर विशेषांकों का प्रकाशन भी करता है तथा अपने ग्राहकों को बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के भेजता है। अत: मुझे / हमें भी अंग्राकित पते पर हलधर टाइम्स डाक / कोरियर द्वारा भेजें।

सदस्यता राशि

☐ एक वर्ष रु. 250/- ☐ दो वर्ष रु. 450/- ☐ तीन वर्ष रु. 600/- ☐ पांच वर्ष रु. 1000/-

डाक से नियमित रुप से निम्न पते पर हलधर टाइम्स भेजने के लिए डिमान्ड ड्राफ्ट/मनीऑर्डर हलधर टाइम्स के नाम भेज रहा हूं।

नाम / संस्था का नाम .....

ग्राम ..... पोस्ट.....

तहसील ..... जिला.....

फोन ..... पिन कोड

राशि (रुपए) ..... बैंक का नाम .....

डिमान्ड ड्राफ्ट / मनीऑर्डर क्रमांक (डीडी/एमओ हलधर टाइम्स के नाम भेजें)

•सदस्यता रजिस्ट्रेशन क्रं. .....रसीद क्रं. .....

•मुझें हलधर टाइम्स के ग्राहक बनने की प्रेरणा (नाम, पता व अंशकालिक संवाददाता/प्रतिनिधि की सील) .....

..... ने दी है।

दिनांक ..... हस्ताक्षर

सदस्यता हेतु लिखे
प्रसार प्रभारी →

हलधर टाइम्स

सी-17, पुरोहित जी का बास, सरकारी मिडिल स्कूल के पास, 22 गोदाम, जयपुर-302006

Ph.: 0141-4021593 ■ Telefax : 0141-2213100 ■ Visit us : www.haldhartimes.in

एमबीए पास ने जॉब छोड़कर महकाई फिजां, कमाई 13 लाख

कपिल जैन

मो. : 99203-45737

बात जब फूलों की होती है तो चर्चा उनकी खुशबू और गुणवत्ता तक ही सीमित रह जाती है। फूलों से मिलने वाली आय पर किसी का ध्यान नहीं जाता है। लेकिन, ऐसे भी लोग है, जो अच्छी खासी नौकरी छोड़कर फूलों की खेती से अपना जीवन महका रहे है। ऐसे ही किसान है एमबीए पास किसान है कपिल जैन। जो गुलाब की खेती के साथ उसके प्रसंस्कृत उत्पाद भी तैयार कर रहे है। साथ ही, औषधीय फसलों की ओर भी कदम बढ़ा चुके है। गौरतलब है कि खेती से जुड़ने से पूर्व कपिल मुबंई में नौकरी करते थे। उनका कहना है कि खेती में रूचि होने के कारण जॉब छोड़कर इससे जुड़ा। वर्तमान में गुलाब और स्ट्रॉबेरी की खेती से सालाना 12-13 लाख रूपए का शुद्ध मुनाफा कमा रहा हूँ। जबकि, 20-25 लाख की आमदनी परम्परागत फसल उत्पादन से मिल जाती है।

बनियानी, कोटा। पत्ती-पत्ती होकर बिखरने वाला गुलाब फिजां को ही नहीं, किसानों की आमदनी को भी महकाता है। खेतों को गुलाब से महकाने वाले ऐसे ही किसान है कपिल जैन। जो अब स्ट्रॉबेरी के साथ-साथ औषधीय फसलों की ओर कदम बढ़ा चुके है। किसान राजू का कहना है कि गुलाब और स्ट्रॉबेरी के उत्पादन से सालाना 12-12 लाख रूपए की बचत मिल जाती है। गौरतलब है कि किसान कपिल गुलाब के प्रसंस्कृत उत्पाद तैयार कर रहे है। उन्होंने बताया कि ये आय परम्परागत फसलों से मिलने वाली आय से अलग है। किसान कपिल ने हलधर टाइम्स को बताया कि परिवार के पास 100 बीघा जमीन है। परिवार की आर्थिक स्थिति शुरू से ही बेहत्तर रही। एमबीए करने के बाद जॉब के सिलसिले में मुबंई चला गया। करीब 11 साल तक नौकरी करने के बाद गांव लौट आया और खेती में नवाचार करने लगा। उन्होंने बताया कि गुलाब और स्ट्रॉबेरी के उत्पादन को अभी ज्यादा समय नहीं हुआ है। लेकिन, भविष्य का ताना-बाना अब खेती में नजर आने लगा है। उन्होंने बताया कि क्षेत्र में फसलों की स्थिति को देखने के बाद गुलाब की खेती का रूख किया। करीब 5 साल से गुलाब का उत्पादन ले रहा हूँ। इससे खर्च निकालने के बाद साढे चार से पांच लाख रूपए की शुद्ध आमदनी मिल जाती है। गौरतलब है कि किसान कपिल 6 बीघा क्षेत्र में गुलाब की खेती कर रहे है।

गुलाब प्रसंस्कृत उत्पाद

उन्होंने बताया कि गुलाब की खेती से जुड़ने के बाद बाजार खपत का आंकलन करके शेष रहने वाली उपज से प्रसंस्कृत उत्पाद भी तैयार करना शुरू कर दिया। गुलाब जल तैयार करने का संयंत्र स्थापित किया। साथ ही, सूखी गुलाब पत्ती के लिए सोलर ड्रायर का उपयोग कर रहा हूँ। तैयार उत्पादों को थोक में सप्लाई कर रहा हूँ।

स्ट्रॉबेरी से अच्छी आमदनी

उन्होने बताया कि गुलाब की खेती में सफलता मिलने के बाद स्टॉबेरी खेती का रूख किया। करीब डेढ़ बीघा क्षेत्र में स्ट्रॉबेरी का उत्पादन ले रहा हूँ। उत्पादन लागत निकालने के बाद इस फसल से सालाना 6-7 लाख रूपए की बचत मिल रही है।

परम्परागत फसलों का उत्पादन

उन्होने बताया कि परिवार के पास 100 बीघा जमीन है। सिंचाई के लिए ट्यूबवैल है। परम्परागत फसलो में धान, सोयाबीन, सरसों, चना, गेहूं सहित दूसरी फसलों का उत्पादन लेता हूँ। इन फसलों से सालाना 20-25 लाख रूपए की आय मिल जाती है।

व्यवसायिक पशुपालन की तैयारी

उन्होंने बताया कि पशुधन में मेरे पास तीन गाय है। प्रतिदिन 8-10 लीटर दुग्ध का उत्पादन होता है। दुग्ध घर में काम आ जाता है। वहीं, पशु अपशिष्ट से कम्पोस्ट खाद तैयार कर रहा हूँ। उन्होने बताया कि जल्द ही पशुपालन को भी व्यवसायिक रूप दूंगा।

स्टोरी इनपुटः एनबी मालव, उपनिदेशक, उद्यान, कोटा

ट्रांसपोर्ट कारोबारी ने वर्मी खाद को बनाया कमाई का जरिया

अरूण शर्मा

मो. : 7725912311

किसानों की मेहनत को प्रोत्साहन मिले तो आर्थिकी को रफ्तार पकडते ज्यादा समय नहीं लगता है। किसान अरूण शर्मा को ही देखिए। ट्रांसपोर्ट का कारोबार छोड़कर गोबर में समृद्धि की तलाश में जुटे हुए है। उनका कहना है कि वर्मी कम्पोस्ट के उत्पादन से मासिक 12-15 हजार रूपए की आमदनी मिलने लगी है। आय के इस आंकडे को देखते हुए वर्मी इकाई को विस्तार की तैयारी में जुटा हुआ हूं। इसके अलावा खेती और पशुपालन से अच्छी आमदनी मिल जाती है।

सवाईपुर, भीलवाड़ा। आधुनिक कृषि तकनीक का जलवा एक आम किसान के खेतों में भले ही नजर नहीं आए। लेकिन, गोबर अपना कमाल दिखा रहा है। शहरी हो या फिर ग्रामीण युवा। गोबर उनके लिए आकर्षण का केन्द्र बनता जा रहा है। गोबर से मासिक हजारो की आय लेने वाले ऐसे ही किसान है अरूण शर्मा। जिन्होंने ट्रांसपोर्ट का कारोबार छोड़कर खेती पर फोकस किया है। उनका कहना है कि एक मित्र की सलाह पर वर्मी खाद उत्पादन से जुड़ा। अब मासिक 12-15 हजार रूपए की आमदनी घर बैठे प्राप्त कर रहा हूँ। किसान अरूण ने हलधर टाइम्स को बताया कि परिवार के पास 6 बीघा कृषि भूमि है। जीएनएम करने के बाद एक हॉस्पिटल में नौकरी की। लेकिन, मिलने वाली तनख्वाह से परिवार की जिम्मेदारियां भी पूरी नहीं हो पाती थी। इस स्थिति को देखकर ट्रांसपोर्ट का कारोबार शुरू किया। इस व्यवसाय में अच्छी आमदनी मिलने लगी। लेकिन, मेरे मित्रों ने जब आधुनिक खेती का ककहरा लिखना शुरू किया तो मुझसे भी रहा नहीं गया। ट्रांसपोर्ट कारोबार के साथ-साथ खेती को समय देना शुरू किया। इसी बीच चित्तौड़गढ़ जाना हुआ। वहां पर वर्मी खाद उत्पादन देखने का मौका मिला। इसके बाद कृषि विज्ञान केन्द्र से वर्मी उत्पादन की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने बताया कि वर्मी खाद उत्पादन का सिलसिला 5-6 इकाई से शुरू किया। वर्तमान में मेरे पास 40 वर्मी बेड है। इससे सालाना 8-10 टन वर्मी खाद का उत्पादन मिल रहा है। जिससे मासिक 12-15 हजार रूपए का शुद्ध लाभ प्राप्त हो रहा है।

परम्परागत फसलों का उत्पादन

उन्होंने बताया कि परिवार के पास 6 बीघा कृषि भूमि है। जिसमें से 4 बीघा क्षेत्र में परम्परागत फसलों का उत्पादन लेता हूँ। शेष दो बीघा जमीन में पशुओं के लिए हरे चारे का उत्पादन लेता हूँ। उन्होने बताया कि परम्परागत फसलों में मूंगफली, मक्का, सरसों, चंवला, गेहूं आदि का उत्पादन लेता हूँ। खर्च निकालने के बाद इन फसलों से डेढ़ से दो लाख रूपए की आमदनी मिल जाती है।

पशुपालन से भी आय

उन्होंने बताया कि पशुधन में मेरे पास 7 गाय है। प्रतिदिन 12-15 लीटर दुग्ध का उत्पादन हो रहा है। दुग्ध का विपणन 50 रूपए प्रति लीटर की दर से उपभोक्ताओं को कर रहा हूँ। वहीं, पशु अपशिष्ट का उपयोग वर्मी खाद बनाने में हो जाता है।

स्टोरी इनपुटः डॉ. केसी नागर, डॉ. सीएम यादव, केवीके, भीलवाड़ा

शैतान को खेती से 9 लाख

शैतान सिंह

मो. : 9828733427

रेतीली भूमि में आय बढ़ाना किसी चुनौति से कम नही है। लेकिन, आत्मबल, आधुनिक कृषि तकनीक और वर्षा जल संरक्षण जैसे कार्यो से किसान अपनी आर्थिकी को बदल सकता है। किसान शैतान, नाम से जरूर शैतान है। लेकिन, कृषि नवाचार अपनाने में दूसरे किसानों को पीछे छोड़ चुका है। समेकित खेती से सालाना 8-9 लाख रूपए की आय ले रहा है। उल्लेखनीय है कि किसान शैतान आईटीआई करने के बाद खेती से जुड़ा है।

आसलसर, नागौर। रेतीलें खेतों और लवणीय पानी में अपने इरादों को मंजिल देने वाला किसान है शैतान। शैतान ने अपने नाम के इतर जाकर कृषि में नवाचारों को अपनाया है। सालाना 8-9 लाख रूपए का शुद्ध लाभ शैतान को खेती से हो रहा है। कोरोनाकाल में शैतान ने आय बढौत्तरी के लिए घर में ऑयस्टर मशरूम का उत्पादन लिया। मशरूम उत्पादन का कार्य अब भी जारी है। किसान शैतान ने हलधर टाइम्स को बताया कि परिवार के पास 35 बीघा कृषि भूमि है। पिताजी के खेती करते हुए मैने पढ़ाई की। 12वीं पास करने के बाद आईटीआई की। कुछ साल खाली बैठा रहा। लेकिन, बाद में खेती से जुड़ गया। उन्होंने बताया कि परम्परागत फसल उत्पादन का अनुभव तो मुझे था। लकिन, कोरोना के संक्रमण काल में आय बढ़ाने की सोच ने मुझे कृषि विज्ञान केन्द्र, मौलासर से जोड़ दिया । केन्द्र के वैज्ञानिकों ने मुझे घर में आयस्टर मशरूम के उत्पादन से जोडने का काम किया। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिकों की तकनीकी सहायता से मशरूम की खेती शुरू करने लगा। घर के बाहर कच्चे कमरे में मशरूम उगाने के लिए गेहूं का भूसा एकत्र कर प्लास्टिक के बैग में भरकर बीज की बुवाई कर दी। कुछ दिन बाद ढींगरी मशरूम तैयार होने लगी। उन्होंने बताया कि मशरूम की इस किस्म के लिए सर्दी का मौसम उपयुक्त रहता है। 20-25 डिग्री सेंटीग्रेड के तापमान की जरूरत होती है। जबकि, कमरे में आर्द्रता 90 प्रतिशत तक होनी चाहिए। इसे बंद कमरे में उगाया जाता है। इसके लिए मिट्टी की जरूरत नही होती है।

परम्परागत से 5 लाख

उन्होंने बताया कि परम्परागत फसलों में बाजरा, गेहूं, ईसबगोल, चना, मेथी, मूंगफली, ग्वार, मोठ और मूंग का उत्पादन लेता हूँ। इन फसलों से खर्च निकालने के बाद 5 लाख रूपए का मुनाफा मिल जाता है।

6 बीघा में सब्जी

उन्होंने बताया कि पानी लवणीय होने के कारण पहले सब्जी फसलों का उत्पादन नहीं करता था। लेकिन, फार्मपौंड बनाने के बाद 6 बीघा क्षेत्र में तरककड़ी, तरबूज, लौकी, मिर्च, टमाटर आदि सब्जी फसलों का उत्पादन लेता हूँ। इन फसलों से सालाना दो से ढ़ाई लाख रूपए की आय मिल जाती है।

बकरी-भेड़-मुर्गीपालन

किसान शैतान खेती से अतिरिक्त आमदनी के लिए पशुपालन के साथ-साथ बकरी-भेड़ और मुर्गीपालन भी कर रहा है। उन्होंने बताया कि पशुधन में 4 गाय और 5 भैंस मेरे पास है। प्रतिदिन 20 लीटर दुग्ध का उत्पादन मिलता है। दुग्ध से घी तैयार करता हूँ। इस तरह 50-60 हजार रूपए की आय मिल जाती है। छाछ को पशुओं को पिला देता हूँ। उन्होंने बताया कि 40 मुर्गियां और दो दर्जन के करीब भेड़- बकरी मेरे पास है। भेड़-बकरी से सालाना तीन लाख रूपए की आय मिल जाती है।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक शरद शर्मा के द्वारा अम्बर ऑफसेट प्रा. लि., डी.एल. टॉवर, 3-ए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर से मुद्रित एवं सी-17, पुरोहित जी का बास, सरकारी मिडिल स्कूल के पास, 22 गोदाम, जयपुर-302006 से प्रकाशित।
संपादक : शरद शर्मा। फोन : 0141-4021593, फैक्स : 0141-2213100, ईमेल : haldhartimes@gmail.com or rediffmail.com (सभी मामलों का न्याय क्षेत्र जयपुर)